संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
१ दिसम्बर २०१२
वर्ष : २२ अंक : ६
(निरंतर अंक : २४०)

हे मानव ! तू अमृतपुत्र है।
तू किस उलझन में उलझा है भैया ?
छोड़ इन तुच्छ चीजों की
इच्छाओं को। फिर तेरे
अंदर संगीत गूँजने लगेगा,
'सोऽहं... शिवोऽहं'
के गीत गूँजने लगेंगे ।
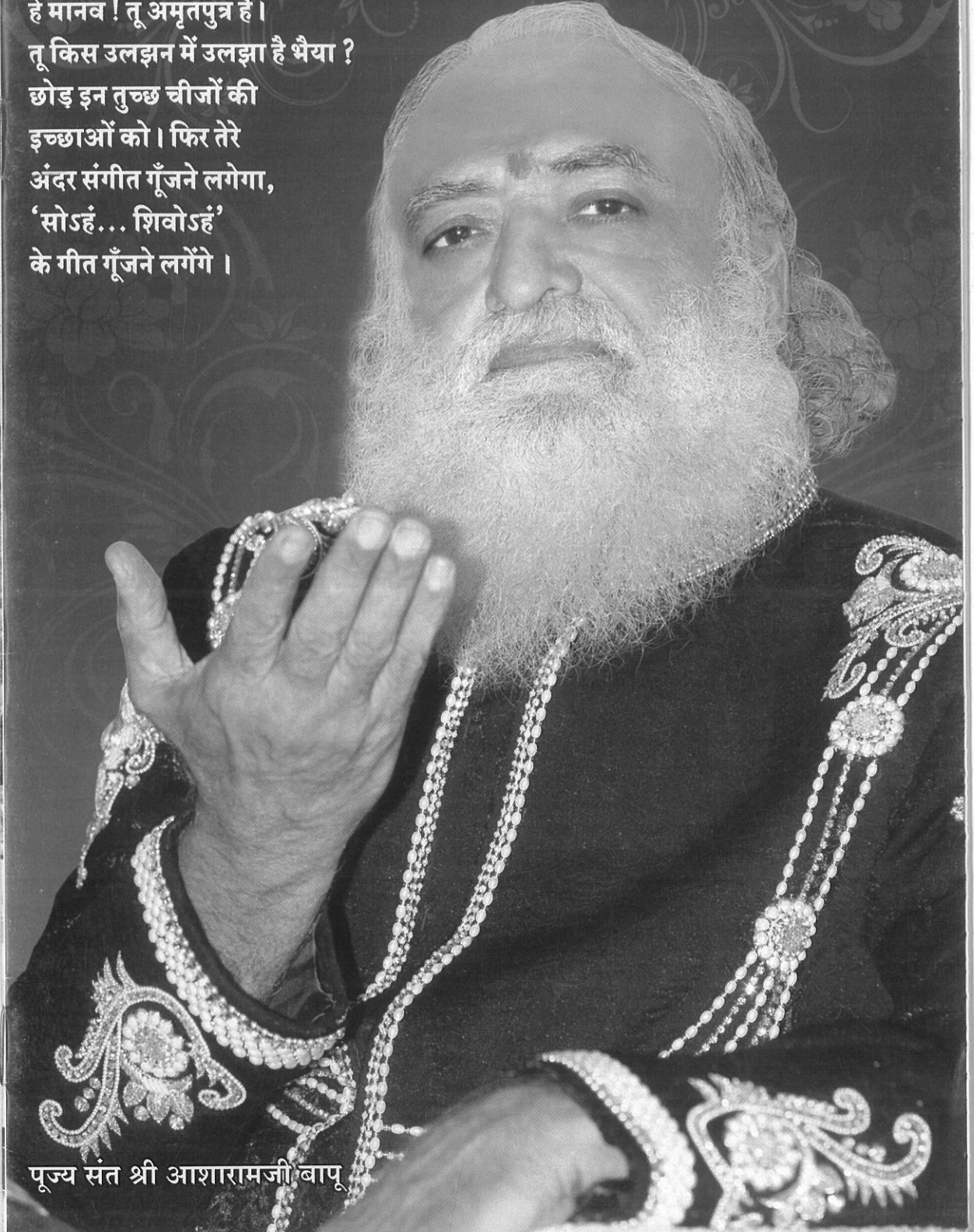
पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

‘प्रकृति भी तुम्हारी आज्ञा मानेगी’
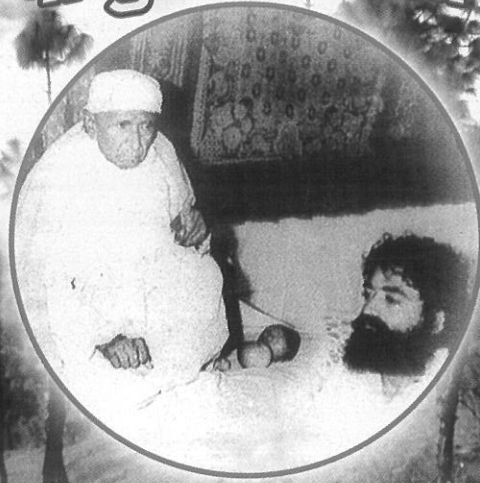
परब्रह्म-परमात्मा की प्रसन्नता व संतुष्टि के लिए ही प्रकृति ने यह संसाररूपी खेल रचा है और जिनकी ब्रह्म में स्थिति हो जाती है, ऐसे महापुरुषों का संकल्पबल असीम होता है। ऐसे निरिच्छ महापुरुष कई बार सर्वमांगल्य के भाव से भरकर प्रकृति को बदलाहट के लिए आज्ञा देते हैं तो कई बार स्वयं प्रकृति ऐसे महापुरुषों की सेवा के लिए तत्पर हो जाती है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें ब्रह्मनिष्ठ पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के जीवन में कई बार देखने को मिला है।

जो गुरुआज्ञा मानता है...

एक बार भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज ने बापूजी को कुछ भक्तों को चाइना पीक (वर्तमान में नैना पीक) दिखाने की आज्ञा दी। ओलों की वर्षा और घना कोहरा होने से सभी यात्री वापस लौटने लगे परंतु अपने सद्गुरुदेव की आज्ञा पूरी करने हेतु बापूजी उन भक्तों को समझाते-बुझाते, कभी सत्संग सुनाते कैसे भी करके युक्ति से गन्तव्य स्थान तक ले गये। वहाँ पहुँचे तो मौसम एकदम साफ हो गया था। भक्तों ने चाइना पीक देखा। वे बड़ी खुशी से लौटे और पूरा हाल साँईंजी को कह सुनाया। जिस पर साँईं श्री लीलाशाहजी का हृदय बापूजी के लिए करुणा-कृपा से छलक उठा और वे बोले : “जो गुरुआज्ञा मानता है, प्रकृति भी उसकी आज्ञा मानेगी।” और आज हम देख रहे हैं कि ब्रह्मज्ञानी का यह ब्रह्मवाक्य साकार होकर ध्रुव सत्य के रूप में देदीप्यमान हो रहा है। पूज्य बापूजी के करोड़ों शिष्यों के जीवन इसकी अनंत अद्भुत गाथाएँ हैं। प्रकृति और परमेश्वर की इस अद्भुत, मधुमय लीला-सरिता से कुछ आचमन :

करुणावत्सल बापूजी अकालपीड़ित भक्तों की करुण पुकार सुनकर अपने संकल्पबल से कहीं वर्षा करने की लीला करते हैं तो कहीं बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं को अपने संकल्पबल द्वारा टाल देते हैं। सितम्बर २००५ में भूकम्प की तबाही से उभरे रापर क्षेत्र के अकालपीड़ित लोगों की व्यथा सुनकर बापूजी ने कहा : “यह सत्संग पूरा करेंगे, फिर वर्षा करना ठाकुरजी !” विनोद-विनोद में भक्तों से भी यही कहलवाया और खुद हो गये चुप ! बापूजी ने एक नजर डाली आकाश पर, भक्तों पर और फिर शुरू कर दिया सत्संग। सत्संग पूरा होते ही लोग अपने-अपने घर पहुँचे और वर्षा ने अपना रंग दिखाया। पूरे रापर, कच्छ में खूब वर्षा हुई। फिर तो सिद्धपुर, विरमगाम, खेरालू... कितने-कितने स्थानों पर यह लीला चलती रही इसकी गिनती कर पाना अब सम्भव नहीं है।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

क्या ऐसी दुर्घटना में आज तक कोई जीवित बचा है ?

“सृष्टिकर्ता खुद लायेगा” ...और वह लाया

वह आम का वृक्ष जो बारहों महीने फल देता है।

...और गाय ने फिर कभी दूध देना बंद नहीं किया।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका
हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २२ अंक : ६
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २४०)
१ दिसम्बर २०१२ मूल्य : ₹ ६
मार्गशीर्ष-पौष वि.सं. २०६९

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५
आजीवन	₹ ५००	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

इस अंक में...

(१) प्रकृति भी तुम्हारी आज्ञा मानेगी — २
(२) आश्रम के खिलाफ कुप्रचार करनेवालों को सर्वोच्च न्यायालय का करारा तमाचा — ४
(३) प्रसंग माधुरी ✲ वाह यार ! तेरी लीला... — ५
(४) तत्त्व दर्शन ✲ सब देवों का देव — ७
(५) विवेक जागृति ✲ जैसी नजर, वैसे नजारे — ११
(६) बाल कटवाने के नियम — १२
(७) नारी ! तू नारायणी... — १३
✲ सदा अजेय थी जिसकी शमशेर : नारीरत्न रत्नावती
(८) कब तक सुख भोग सकोगे ? — १४
(९) भागवत प्रसाद ✲ भगवद्भक्त राजा पृथु — १५
(१०) गीता अमृत — १६
✲ सर्वांगीण शुद्धि द्वारा परम शुद्धि का साधन : गीता
(११) जीवन सौरभ ✲ आत्मज्ञान ही सार, बाकी सब बल भार ! — १८
(१२) चिंतनधारा — २०
✲ ज्ञान के बिना भोग नहीं
(१३) साधना प्रकाश — २१
✲ सद्गुरु से क्या सीखें ?
(१४) एकादशी माहात्म्य — २२
✲ पितरों का उद्धारक व मोक्षप्रदाता व्रत
✲ भोग व मोक्ष प्रदान करनेवाला व्रत
(१५) संयम की शक्ति — २४
✲ यौवन का मूल : संयम-सदाचार
(१६) प्रेरक प्रसंग — २५
✲ उत्तम चरित्र : जीवन का आधार
(१७) विचार मंथन — २६
✲ तीन दिव्य गुण, तीन महा अवगुण
(१८) सिजेरियन डिलीवरी खतरनाक — २७
(१९) शरीर स्वास्थ्य — २८
✲ शीत ऋतु में स्वास्थ्य-संवर्धन ✲ अक्सीर व अनुभूत प्रयोग
(२०) सेवा संजीवनी — ३०
✲ विद्यार्थियों की उन्नति का राजमार्ग : 'ऋषि प्रसाद'
(२१) संस्था समाचार — ३१

"साँच को आँच नहीं"

आश्रम के खिलाफ कुप्रचार करनेवालों को सर्वोच्च न्यायालय का करारा तमाचा

जुलाई २००८ में संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद में पढ़नेवाले दो बच्चों की अपमृत्यु के मामले में ९-११-१२ को सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में आश्रम के सात साधकों पर आपराधिक धारा ३०४ लगाने की गुजरात सरकार की याचिका को खारिज कर दिया है। मामले की सीबीआई से जाँच कराने की माँग को भी ठुकरा दिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने गुजरात उच्च न्यायालय के फैसले को मान्य रखा है।

* आश्रम की पवित्रता पर लगाये गये आरोप खारिज
* सीबीआई जाँच की माँग भी ठुकरायी

न्याय-सहायक विज्ञान प्रयोगशाला (एफएसएल), शव-परीक्षण (पोस्टमार्टम) आदि कानूनी एवं वैज्ञानिक रिपोर्टें बताती हैं कि बच्चों के शरीर के अंगों पर मृत्यु से पूर्व की किसी भी प्रकार की चोटें नहीं थीं। दोनों ही शवों में गले पर कोई भी जख्म नहीं था। सिर के बालों का मुंडन या हजामत नहीं की गयी थी। बच्चों के साथ किसीने सृष्टिविरुद्ध कृत्य (सेक्स) नहीं किया था। बच्चों के शरीर में कोई भी रासायनिक विष नहीं पाया गया।

एफएसएल रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि दोनों बच्चों के शवों पर जानवरों के दाँतों के निशान पाये गये अर्थात् शवों के अंगों को निकाला नहीं गया था अपितु वे जानवरों द्वारा क्षतिग्रस्त हुए थे। **दोनों बच्चों पर कोई भी तांत्रिक विधि नहीं की गयी थी**। पुलिस, सीआईडी क्राइम और एफएसएल की टीमों के द्वारा आश्रम तथा गुरुकुल की बार-बार तलाशी ली गयी, विडियोग्राफी की गयी, विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा साधकों से अनेकों बार पूछताछ की गयी परंतु उनको तांत्रिक विधि से संबंधित कोई सबूत नहीं मिला।

जाँच अधिकारी द्वारा धारा १६० के अंतर्गत विभिन्न अखबारों एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों तथा सम्पादकों को उनके पास उपलब्ध जानकारी इकट्ठी करने के लिए सम्मन्स दिये गये थे। 'सूचना एवं प्रसारण विभाग, गांधीनगर' द्वारा अखबार में प्रेस-विज्ञप्ति भी दी गयी थी कि किसीको भी आश्रम में यदि किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि अथवा घटना होती है ऐसी जानकारी हो तो वह आकर जाँच-अधिकारी को जानकारी दे। यह भी स्पष्ट किया गया था कि जानकारी देनेवाले उस व्यक्ति को पुरस्कृत किया जायेगा एवं उसका नाम गुप्त रखा जायेगा। इस संदर्भ में भी कोई भी व्यक्ति सामने नहीं आया।

न्यायमूर्ति त्रिवेदी जाँच आयोग में बयानों के दौरान आश्रम पर झूठे, मनगढ़ंत आरोप लगानेवाले लोगों के झूठ का भी विशेष जाँच में पर्दाफाश हो गया।

गुजरात में इन दो बालकों के मामले को लेकर पिछले काफी समय से आश्रम और साधकों के विरुद्ध एक सुनियोजित भ्रामक प्रचार चलाया जा रहा था, जिसकी आड़ में असामाजिक तत्त्व प्रशासन के कुछ लोगों के सहारे आश्रम की सत्प्रवृत्तियों व पूज्य बापूजी के सत्संग का द्वेषपूर्ण विरोध कर रहे थे। सर्वोच्च न्यायालय के इस आदेश के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि ये तत्त्व

सिर्फ राजकीय हथकंडे बन के संत श्री आशारामजी बापू जैसे संतों पर झूठे व मनगढ़ंत आरोप लगाकर सत्संग और सत्प्रवृत्तियों में बाधा उत्पन्न करने का घोर पाप कर रहे थे। किंतु कहते हैं न, कि

साँच को आँच नहीं और झूठ को पैर नहीं।

इसलिए झूठी बातों को लम्बे समय तक नहीं चलाया जा सकता। पूज्य बापूजी का इस मामले में उल्लेख तक नहीं आता, फिर भी जो बापूजी का विरोध कर रहे हैं, उनके षड्यंत्र की यहाँ पोल खुल जाती है। समता के सिंहासन पर विराजमान पूज्य बापूजी के इस पर सहज उद्गार थे : ''आश्रम के प्रति द्वेषबुद्धि रखनेवालों को भी भगवान सद्बुद्धि प्रदान करें, ऐसी ही प्रार्थना है।''

सर्वोच्च न्यायालय के उपरोक्त निर्णय ने आश्रम की पवित्रता पर लगाये गये आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया है और आश्रम के विरुद्ध कुप्रचार अभियान छेड़नेवालों के मुँह पर भी करारा तमाचा जड़ दिया है।

बिना किसी तथ्य व प्रमाण के आधार पर ऐसे विश्वप्रसिद्ध संत पर बेबुनियाद आरोप लगानेवाले व उसको तूल देकर समाज में अशांति फैलानेवाले प्रचार माध्यमों पर से भी लोगों का विश्वास उठ चुका है।

आजकल झूठे आरोप लगानेवालों की संख्या बढ़ रही है। झूठे आरोप लगानेवालों को यदि सरकार द्वारा दंडित नहीं किया जायेगा तो इनकी संख्या और बढ़ती जायेगी। आरोप झूठे सिद्ध होने तक जो निर्दोष लोगों की प्रतिष्ठा को हानि होती है तथा आर्थिक हानि भी होती है, उसके लिए जिम्मेदार हैं झूठे आरोप लगानेवाले; उनको कड़ी सजा अवश्य मिलनी चाहिए।

- नीलम दुबे, आश्रम प्रवक्ता

वाह यार ! तेरी लीला...

- पूज्य बापूजी

मैं १७ सितम्बर (२०१२) की रात्रि को हरिद्वार आश्रम में जल्दी सो गया था तो दो बजे आँख खुली। जोरों की बरसात हो गयी थी। मैं कुटिया के चारों तरफ घूमने निकला। एक मकड़ी ने ऐसा जाला बुना था कि मैंने कहा : 'देख लो, कैसा कलाकार बैठा है ! कैसा कौशल भरा हुआ है !' मकड़ी की खोपड़ी में यह कौशल कहाँ से आया ? कैसी रचना ! बड़े-बड़े वास्तुकार उसके आगे झख मारते रह जायें। मकड़ी अपने शरीर से तंतु निकाले, ताना बुने - यूँ घुमाये, यूँ घुमाये... कैसा सुंदर ! और फिर बीचोंबीच में वह खुद स्थित हो गयी। जब मैंने धीरे से उसको स्पर्श किया तो थोड़ा वह सावधान हो गयी। फिर दूसरी बार जरा हलकी-सी उँगली लगायी तो वह और थोड़ा सिकुड़ी। फिर दो-तीन बार जरा ज्यादा उँगली लगायी तो उसने देखा कि अब छोड़ो, यहाँ से भागो। मुआ जाला जाय तो जाय, अपनी जान तो बचाओ ! वहाँ जिस तंतु से वह जुड़ी थी, उसके द्वारा ऊपर चढ़ गयी। और मेरी भी टॉर्च तेज थी, मैंने देखा कि वह पत्ते के बीच घुस के सुरक्षित बैठ गयी है। मैंने कहा : ''अच्छा, आ जाओ प्रभु ! अपनी जगह में आ जाओ।'' अपन चलते बने।

यह गीता का, उपनिषदों का, वेदों का ज्ञान है तो मकड़ी और जाले में भी भगवान का आनंद आता है। भगवान-ही-भगवान दिखते हैं सब जगह।

जिधर देखता हूँ खुदा ही खुदा है।
खुदा से नहीं चीज कोई जुदा है॥

जब अव्वल व आखिर खुदा-ही-खुदा है।
तो अब भी वही, कौन इसके सिवा है ॥
है आगाजो[१]-अंजाम[२] जेवर[३] का जर[४] में।
मियां[५] में न हरगिज[६] वह गैरअज तिला[७] है ॥
जिसे तुम समझते हो दुनिया ऐ गाफिल[८]।
यह कुल हक[९] ही हक, नै जुदा नै मिला है ॥

क्या आनंदमय ब्रह्म बरस रहा है ! क्या पत्ते-पत्ते में उसका कला-कौशल है ! क्या मकड़ी के जाले बनाने में उसकी कला-कुशलता है ! वह देख-देख के आनंद लें। सबसे सुहृदता करके अपने आत्मस्वभाव को जगाओ। जो भगवान का स्वभाव है, उसका अंश तुम्हारे में छुपा है। उसे छोड़कर तामसी-राजसी अंश में क्यों उलझते हो ? झगड़ा-लड़ाई, निंदा - ये राजसी-तामसी दुर्गुण हैं, प्रकृति के हैं। परमात्मा का तो अपना स्वभाव है।

ब्रह्मवेत्ताओं को यह सारा जगत ब्रह्ममय दिखेगा - **वासुदेवः सर्वमिति...** 'सब वासुदेव है' और जिज्ञासुओं को यह माया का विलास दिखेगा और जो रागी-द्वेषी हैं उनके लिए यह संसार काटता, डँसता, राग-द्वेष की आग में तपाता हुआ, नेत्रों के आकर्षण से ठुस्स करता हुआ, वाहवाही के आकर्षण से फुस्स करता हुआ नरकालय हो जाता है। यह संसार नरकालय भी हो जाता है और भगवान की लीलास्थली भी हो जाता है और **वासुदेवः सर्वम्** भी है। सब भगवान-ही-भगवान है... ऐसा कोई कण नहीं और ऐसा कोई क्षण नहीं जिसमें भगवत्सत्ता न हो।

हर रोज खुशी, हर दम खुशी, हर हाल खुशी।
जब आशिक मस्त प्रभु का हुआ,
तो फिर क्या दिलगीरी बाबा ॥

यूँ भी वाह, वाह ! यूँ भी वाह, वाह ! आनंद हुआ, वाह ! वाह !! हे हरि ! हे हरि !! ॐ... ॐ...

सूरज को ढूँढ़ने पर भी अँधेरा नहीं मिलेगा, ऐसे ही जिसको पराभक्ति मिल गयी उस प्यारे की, उसको ढूँढ़ने पर भी दुःख नहीं मिलेगा।

मुझे फाल्सी मलेरिया हो गया था। हीमोग्लोबिन 7 gm% हो गया और अंग्रेजी दवाओं के रिएक्शन ने भी आर-पार की लड़ाई दिखा दी। चिड़िया 'चें' करे तो मानो एक तलवार लग गयी, ऐसी पीड़ा कि न बैठ सकें न उठ सकें, न खड़े रहने में अच्छा लगे न लेटने में, बस क्या बेचैनी-बेचैनी... ! शरीर की तो दुर्दशा थी ! तब मैं कहता, 'यह किसको हो रहा है ?' तो बड़ी हँसी आती। तो दुःख, पीड़ा, आपत्ति भगवान के आगे कोई मायना नहीं रखतीं। पीड़ा तो ऐसी थी कि भगवान... प्रसूति की पीड़ा कुछ भी नहीं है ! माइग्रेन से भी ज्यादा होती है, 'ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया' (Trigeminal neuralgia) बोलते हैं। आधुनिक चिकित्सक बताते हैं कि इससे बड़ी कोई पीड़ा नहीं होती। लेकिन ऐसी बड़ी पीड़ा में भी जरा-सा याद करता कि 'किसको हो रही है ?' तो भीतर से आवाज आती, 'ऐ महाराज ! शरीर को हो रही है, हम तो उससे न्यारे हैं।' कितना गीता का दिव्य ज्ञान ! कितना वैदिक दिव्य ज्ञान ! कितना मनुष्य की महानता का खजाना खोल रखा है शास्त्रों ने !

अच्युत की सम्पूर्ण आराधना कैसे हो ?

'विष्णु पुराण' (१.१७.९०) में आता है : **समत्वमाराधनमच्युतस्य।** 'समता ही अच्युत की वास्तविक आराधना है।' कोई भी परिस्थिति आये-जाय, वाह-वाह !

संसारी के लिए संसार दुःख का विलास है। कभी बेटी का दुःख, कभी प्रसूति का दुःख, कभी पति का दुःख, कभी किसीको पत्नी का दुःख, कभी कर (टैक्स) का दुःख... संसार से सुख लेने के लिए जो संसार को चाहता है उसके लिए संसार दुःखविलास है। जिज्ञासु के लिए, विरक्त के लिए माया का विलास है और जिनको परमात्मा अपनी पराभक्ति दे दे उनके लिए ब्रह्म का विलास है। उनके सत्संग में बैठना भी ब्रह्मविलास है। सभी आनंदित हो जाते हैं। ब्रह्मविलास !... ❐

---

१. आरम्भ, आदि २. अंत ३. भूषण ४. स्वर्ण ५. बीच में ६. कदापि ७. स्वर्ण से भिन्न ८. अज्ञानी ९. सत्यस्वरूप परमात्मा

सब देवों का देव

– पूज्य बापूजी

मनमानी श्रद्धा होती है तो मनमाना फल मिलता है । और मन थोड़ी सीमा में ही होता है, मन की अपनी सीमा है । श्रद्धा सात्त्विक, राजस, तामस – जैसी होती है, वैसा ही फल मिलता है । आप किसी देवता को रिझाते हैं और फल चाहते हैं तो जैसे किसी मनुष्य को रिझाया तो ५ साल की कुर्सी है । तो ५ साल की कुर्सी या १०-१५ साल का उसका सत्ताबल, फिर दूसरी कोई सरकार, दूसरा कायदा हो गया । तो जितने आयुष्यवाला पद होगा, उतना ही आपको फायदा हुआ ।

ब्रह्माजी के एक दिन में १४ इन्द्र बदलते हैं । देवता की उपासना करो तो वे जब बदल जाते हैं तो फिर नये इन्द्र का नया कानून हो जाता है । हर ५ साल में जो-जो कानून पहली सरकार ने पास किये, उनमें भी कई फेरबदल हो जाते हैं, अधिकारियों में फेरबदल हो जाता है । 'यह अधिकारी अपना है, यह अपना है, यह फलाने का दायाँ हाथ है...' – ऐसा करते-करते, खुशामदखोरी करते-करते, भीख माँगते-माँगते, उनका आश्रय लेते-लेते आखिर देखो तो निराश !

छोटी बुद्धि होती है न, तो छोटे-छोटे ग्रामदेवता को मानते हैं, कोई स्थानदेवता को मानते हैं, कोई कुलदेवता को मानते हैं, कोई किसी देवता को मानते हैं । छोटी-छोटी मति है तो छोटे-छोटे देव में ही अटक जाती है, अब पता ही नहीं कि वह कुलदेवता कब मर जाय, कब ग्रामदेवता मर जाय । कुलदेवता के द्वारा, ग्रामदेवता के द्वारा कुछ भी कृपा होगी तो उसी परमेश्वर की होगी, सत्ता होगी तो उसीकी होगी, संकल्प-सामर्थ्य होगा तो उसीका होगा ।

भगवान कहते हैं :

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥

(गीता : ५.२९)

सारे यज्ञ और तपों के फल का भोक्ता मैं हूँ । **'इदं इन्द्राय स्वाहा ।'** मैं ही भोग रहा हूँ, इन्द्र के पीछे चक्कर क्यों काट रहे हो ? **'इदं वरुणाय स्वाहा । इदं कुबेराय स्वाहा ।'** – ये मातृपिंड करो, पितृपिंड करो, यक्षों को दो लेकिन भगवान कहते हैं कि सबके अंदर अंतरात्मरूप से तो मैं ही हूँ और किसीके द्वारा भी वरदान, आशीर्वाद मिलता है तो मैं ही दे रहा हूँ लेकिन उन छोटी-छोटी आकृतियों में लगे रहे तो फिर वह छोटा-छोटा खत्म हुआ तो तुम्हारी उपलब्धि भी खत्म हुई । उन सबमें मैं हूँ । **भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।** ईश्वर तो बहुत हैं । एक-एक सृष्टि के अलग-अलग ईश्वर हैं । सृष्टियाँ कितनी हैं कोई पार नहीं है लेकिन उन सब सृष्टियों के ईश्वरों-का-ईश्वर अंतर्यामी आत्मा मैं महेश्वर हूँ और कैसा हूँ ? **सुहृदं सर्वभूतानां...** प्राणिमात्र का सुहृद हूँ । अकारण हित करनेवाला हूँ । **ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ।** ऐसा जो मुझे जानता है उसे शांति प्राप्त होती है ।

माँ के शरीर में दूध कौन बनाता है ? ग्रामदेव नहीं बनाता, स्थानदेव नहीं बनाता, कुलदेवता नहीं बनाता । वह माँ का अंतर्यामी देव हमारे लिए दूध बनाने की व्यवस्था कर देता है । बस, इतना पक्का करो कि सारे भगवान, सारे-के-सारे देवता, सारे यक्ष, राक्षस, किन्नर, भगवान, गुरु सबके रूप में वह मेरा परमेश्वर ही है । तो आपका नजरिया बड़ा हो जायेगा, बुद्धि विशाल हो जायेगी । खंड में से अखंड में चले जायेंगे । परिच्छिन्न में से

व्यापक हो जायेंगे। बिंदु में से सिंधु बन जायेंगे। ऐसा कोई बिंदु नहीं है कि सिंधु से अलग हो। ऐसा कोई घड़े का आकाश नहीं है जो महाकाश से अलग हो। ऐसे ही ऐसा कोई जीव नहीं जिसका उस परमेश्वर की सत्ता, स्फूर्ति, चेतना, ज्ञान के बिना कोई अस्तित्व हो।

'हे देवता ! यह दे दे...', बदली हो जायेगी उसकी तो ! वह देगा तो भी तेरे देवता (अंतर्यामी परमात्मा) के बल से देगा, पागल कहीं का ! 'हे फलाने देवता ! यह दे दे...' देखो, मैं अभी तो तुमको पागल बोल देता हूँ किंतु पहले मैं भी पीपल देवता को फेरे फिरता था। उनकी डालियों की चम्पी करता, 'हरि ॐ ॐ...' करके आलिंगन करता, बड़ा अच्छा लगता था। अब पता चल गया गुरुकृपा से कि ओहो ! वही-का-वही था, अपना ही हृदयदेव था।

हे मेरे प्रभु ! हे मेरे साँईं ! हे मेरे भगवानों-के-भगवान लीलाशाहजी भगवान ! माँगने तो आये थे कुछ, और दे डाला कुछ ! माँगने तो आये थे कि चलो शिवजी का दर्शन करा देंगे लेकिन शिवजी जिससे शिवजी हैं वही मेरा अपना-आपा है, वह दे डाला। माँगने तो आते हैं : 'यह हो जाय, वह हो जाय, वह हो जाय...' - छोटी-छोटी चीजें लेकिन सत्संग में इधर-उधर घुमा-फिरा के वही दे देते हैं। ओ हो दाता ! तू सुहृद भी है, उदार भी है, दानी तो कैसा ! राजा तो क्या दान करेगा ? सेठ का बच्चा क्या दान करेगा ? कर्ण भी क्या दान करेगा ? चीज-वस्तुओं का दान करेगा, अपने कवच का दान कर देगा लेकिन भगवान तो अपने-आपका ही दान कर देते हैं। सबसे बड़ा दाता देखो तो तू ही है महाराज ! यह तेरे दाताओं में जो दानवीरता है वह तेरी है प्रभु ! दाताओं में जो दानवीरता है, बुद्धिमानों में जो बुद्धि है, वह तेरी सत्ता है, तेरी महिमा है। जो उसकी तरफ चल देता है न, उसकी मति-गति कोई नाप नहीं सकता।

श्रद्धा शास्त्रविधि से होती है तो ब्रह्मविलास तक पहुँचाती है और श्रद्धा मनमानी होती है तो भूत-भैरव में, बड़े पीर में रुका के जीवन भटका देती है। कर्म का फल कर्म नहीं देता है, कर्म तो कृत है, किसीके द्वारा किया जाता है, खुद जड़ है। कर्म का फल देनेवाला चैतन्य ईश्वर है। और वही ईश्वर जिसमें स्थापना करो कि 'यह देवता मेरे कर्म का फल देगा', उस देवता के द्वारा भी इस ईश्वर का ही अंश कर्म का फल देगा। तो फुटकर-फुटकर बाबुओं को रिझा-रिझा के थक जाओगे, सबके बापों-का-बाप बैठा है उसे पा लो, बस हो गया। परमात्मा तो निर्गुण-निराकार है। किंतु **जो चाहे आकार को साधू परतछ देव।** (परतछ = प्रत्यक्ष) जिसने परमात्मा को अपने आत्मरूप में जाना है वह प्रत्यक्ष, साक्षात् भगवान है। मुझे तो मेरे लीलाशाह भगवान मिल गये। पहले तो अलग-अलग भगवानों की खूब उपासना की, नाक रगड़ी पर जब सद्गुरु भगवान मिल गये तब सब भगवानों को रख दिया। अभी मेरी कुटिया में अगर कोई भगवान होगा तो मेरे गुरु भगवान का चित्र होगा, नहीं तो बिना चित्र के भी मेरे भगवान अब मेरे से अलग नहीं हो सकते। हे हरि ! हे प्रभु ! ॐ ॐ ॐ... □

सर्वेश्वर से नाता जोड़ना है तो...

- पूज्य बापूजी

हथौड़ी ताला तोड़ सकती है, खोल नहीं सकती। चाबी ताला खोल सकती है लेकिन कपड़ा नहीं जोड़ सकती। कपड़े को जोड़ना है तो हथौड़ीरूपी या चाबीरूपी नहीं, सूईरूपी लोहा चाहिए। लोहा तो वही-का-वही लेकिन साधन सूक्ष्म चाहिए। सूई कपड़ा जोड़ती है क्योंकि सूक्ष्म है। ऐसे ही मोटी बुद्धि तोड़ती है, बीच की बुद्धि खोलती है परंतु सूक्ष्म बुद्धि आत्मा से जोड़ देगी। तो आत्मानुभवसम्पन्न महापुरुषों का सत्संग करके आध्यात्मिक ज्ञान के श्रवण-मनन से बुद्धि सूक्ष्म होती है।

(मुखपृष्ठ २ से 'प्रकृति भी तुम्हारी आज्ञा मानेगी' का शेष)

इसी प्रकार रतलाम के पास नामली गाँव, पंचेड़ में पानी की भारी किल्लत थी, जमीन गहरी खोदने पर भी पानी नहीं निकलता था। भक्तों ने गुरुदेव के श्रीचरणों में प्रार्थना निवेदित की। पूज्यश्री ने वहाँ सत्संग किया, फिर जिस स्थान पर जमीन खोदने के लिए गुरुदेव ने आज्ञा की, वहाँ खुदाई करने पर थोड़ी ही गहराई में पानी का स्रोत मिल गया। फिर उस गाँव में जहाँ-जहाँ खुदाई हुई सभी जगह पानी-ही-पानी ! कैसी करुणा है महापुरुषों की !

अभी हाल ही में सभीने एक ऐसा चमत्कार देखा जिसे सभीने २१वीं सदी के उस सबसे बड़े चमत्कार के रूप में नवाजा, जिसे पूरे विश्व के लोगों ने देखा और हर कोई आज भी देख सकता है क्योंकि सौभाग्य से वह चमत्कार कैमरे में भी रिकार्ड हुआ। (देखें सितम्बर २०१२ की 'ऋषि दर्शन' विडियो मैगजीन) स्थान था गोधरा व तारीख थी २९ अगस्त २०१२। यहाँ हुई हेलिकॉप्टर दुर्घटना में जहाँ १०० फुट की ऊँचाई से गिरे हेलिकॉप्टर के पुर्जे-पुर्जे अलग हो गये, वहीं उसमें सवार पूज्य बापूजी के कोमल शरीर का अंग-प्रत्यंग चुस्त-तंदुरुस्त ! हेलिकॉप्टर दुर्घटनाओं के रक्तरंजित इतिहास में यह पहली ही घटना थी, जिसमें किसी भी यात्री का बाल भी बाँका न हुआ हो। उसके अगले ही दिन नौसेना के दो हेलिकॉप्टरों के पंख टकराये और नौ लोगों की मृत्यु हो गयी। बापूजी जिस हेलिकॉप्टर से बिल्कुल सुरक्षित बाहर आये उसकी दशा देखकर तो नास्तिकों का शीश भी संत-चरणों में झुके बिना नहीं रहेगा !

प्रकृति करे सेवा

जिनको कछु न चाहिए, वो शाहन के शाह।

ऐसे अचाह, अलमस्त महापुरुषों की सेवा करके प्रकृति अपना भाग्य बना लेती है। उनके चित्त में बस एक हलका-सा स्फुरण हो और वह वस्तु हाजिर हो जाय, यह बात विज्ञान की समझ से परे है। बापूजी कहते हैं : ''मेरे शरीर को कुछ भी आवश्यकता हो तो पहले चीज आ जायेगी, बाद में लगेगा कि 'हाँ, चलो ले लो।' पहले चीज आयेगी, बाद में आवश्यकता दिखेगी - ऐसी व्यवस्था हो जाती है। आप ईश्वर में टिक जाओ तो प्रकृति आपकी सेवा करके अपने को आनंदित करती है।

जब मैं डीसा (गुजरात) के एकांत में था तो कुटिया से जब बाहर निकलता तो लोग खड़े रहते और हमारे पास तो कुछ होता नहीं था, तो किसीको बुलाया और कहा : ''तुम मूँगफली ले आओ और बच्चों को बाँट दो।'' दो रुपये की बहुत सारी मूँगफली मिल जाती थी। तो उसने मूँगफली लाकर बच्चों को बाँट दी। जो गर्म-गर्म मूँगफली बिकती है न ठेले पर, वह। फिर मन में सोचा, 'अपन किसीसे माँगते नहीं और उसको बोला कि इनको मूँगफली लेकर दे दो। उसको पैसे कैसे देंगे ?' अपने पास तो पैसे थे नहीं। फिर हम नदी पर जा रहे थे तो ज्यों नदी पर गये त्यों दो रुपये के चार नोट ऊपर-ऊपर तैरते हुए आ गये। मैंने उन्हें उठा लिया और उस व्यक्ति को दे दिये कि 'ये ले मूँगफली के पैसे।'

ऐसे ही नारायण जब चौदह-पन्द्रह साल का था तब मेरी रसोई की सेवा करता था। जब मैं दुबई गया तो रसोइया साथ चला। मैं सुरमा लगाता था। मैंने कहा : ''इधर तो गर्मी बहुत है बेटा ! सुरमा लाया है क्या ?''

बोले : ''साँई ! सुरमा तो नहीं लाया मैं।''

''चलो, ठीक है।''

जब दुबई के समुद्र-तट पर घूमने गया तो देखा कि जैसे मिठाई के डिब्बे आते हैं न, वैसे ही छोटा-सा डिब्बा तरंगों पर नाच रहा है। मैंने

कहा : ''इस बक्से में क्या होगा ?'' हाथ लम्बा करके उठा लिया और देखा तो सुरमे की दो शीशियाँ और एक सलाई थी, कई वर्षों तक चला वह। बिल्कुल पक्की, सच्ची बात है !''

कैसी है आत्मवेत्ता संतों की महिमा, जिनकी सेवा करने के लिए प्रकृति भी सदैव मौका ढूँढ़ती रहती है !

पूज्य बापूजी का अवतरण होनेवाला था तो उसके पहले ही परमात्मा ने सौदागर को सत्प्रेरणा दी और वह अत्यंत सुंदर, विशाल झूला लेकर आ गया था। साधनाकाल में बापूजी की ऐसी ऊँचाई थी कि परमात्मा को चुनौती दे दी कि

जिसको गरज होगी आयेगा,
सृष्टिकर्ता खुद लायेगा ॥

पूज्यश्री को प्रातः यह विचार आये उससे पहले ही रात को स्वप्न में किसानों को मार्ग बताकर सृष्टिकर्ता ने ब्रह्मवेत्ता संत के भोजन की व्यवस्था कर दी।

सर्वसुहृद पूज्य बापूजी कहते हैं : ''आप एक बार उस परब्रह्म-परमात्मा में स्थित हो जाओ तो आपके लिए सब सहज हो जायेगा। मुझे जो गाय दूध पिलाती थी, वह गर्भवती हो गयी थी। अब दूध कहाँ से लाना ? तो मैंने प्यार से गाय की गर्दन को सहलाया, वह फोटो भी है। मैंने कहा : ''अब दूध पिलाना बंद कर दिया क्या ?'' फिर उस गाय ने जीवन में दूध कभी बंद नहीं किया जब तक वह जीवित रही (वर्तमान में औरंगाबाद आश्रम में भी एक ऐसी गाय है, जो वर्षभर दूध देती है)। ऐसे ही आम का वृक्ष बारहों महीने फल देता है मेरे को। आँवले का वृक्ष बारहों महीने फल देता है और भगवान तो बारहों महीने, चौबीसों घंटे, हर सेकंड फलित-ही-फलित कर रहे हैं।''

सच ही है, परमात्मा तो ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का स्वरूप है और वही सृष्टिकर्ता, पालनहारा भी है। वही प्रकृति को प्रेरित करके अपने इन साकार स्वरूपों की सेवा में लगाता रहता है। संत कबीरजी ने भी ऐसे महापुरुषों के लिए कहा है :

अलख पुरुष की आरसी साधु का ही देह।
लखा जो चाहे अलख को इन्हीं में तू लख लेह ॥

महापुरुषों से क्या माँगें ?

- पूज्य बापूजी

''संतों के पास आकर सांसारिक वस्तुएँ माँगना तो ऐसा ही है जैसे किसी राजा से हीरे न माँगकर आलू, मिर्च, धनिया माँगा जाय। मैं तुम्हें ऐसा आत्म-खजाना देना चाहता हूँ जिससे सब दुःख सदा के लिए दूर हो जायें। तुम अपने दुःख आप मिटा सको, औरों के भी मिटा सको ऐसा लक्ष्य बना लो और मैं तुम्हारा सहयोग करता हूँ, कदम-कदम पर साथ हूँ।'' ☐

मेधाशक्तिवर्धक प्रयोग

लाभ : इसके नियमित अभ्यास से मेधाशक्ति बढ़ती है।

विधि : सीधे खड़े हो जायें। हाथों की मुट्ठियाँ बंद करके हाथों को शरीर से सटाकर रखें। आँखें बंद करके सिर को नीचे की तरफ इस तरह झुकायें कि ठोढ़ी कंठकूप से लगी रहे और कंठकूप पर हलका-सा दबाव पड़े। इस स्थिति में गहरा श्वास २५ बार लें और छोड़ें। मूल स्थिति में आ जायें।

विशेष : श्वास लेते समय मन में 'ॐ' का जप करें व छोड़ते समय उसकी गिनती करें।

ध्यान दें : यह प्रयोग सुबह खाली पेट करें। शुरू-शुरू में १५ बार श्वास लें और छोड़ें, फिर धीरे-धीरे बढ़ाते हुए २५ तक पहुँचें।

जैसी नजर, वैसे नजारे

- पूज्य बापूजी

जगत तुम्हें आधिभौतिक दिखता है उसकी परवाह नहीं लेकिन देखने का नजरिया तुम आध्यात्मिक करो।

एक वैज्ञानिक को पीपल का पेड़ दिखा, वह बोलेगा : 'पीपल का पेड़ है। इसकी लकड़ियों में ऐसा है - ऐसा है, यह गुण है, यह दोष है। इसके फर्नीचर से ऐसे-ऐसे फायदे होंगे या यह होगा। इसके धुएँ से यह हो रहा है, यह होगा।' वैज्ञानिक ने पीपल को लकड़ी समझकर उसका उपयोग किया।

वैद्य को पीपल का पेड़ दिखेगा तो वह बोलेगा कि 'इसमें पित्तशमन का सामर्थ्य है। इसके छोटे-छोटे पत्तों का - कोंपलों का मुरब्बा बनाकर रोज १० ग्राम खायें तो कैसी भी गर्मी हो शांत हो जायेगी।' वैद्य की दृष्टि है कि 'पेड़ सात्त्विक है, इसमें अद्भुत, शक्तिवर्धक औषधीय गुण छुपे हैं।'

भक्त पीपल को देखता है तो कहता है : 'ये तो पीपल देवता हैं। इनमें आधिदैविक स्वभाव के आत्मा भी वास करते हैं। ये तो नारायण की अभिव्यक्ति हैं।' वह पीपल के पेड़ को धागा बाँधेगा, उसके चारों तरफ घूमेगा।

'अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारणभेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥'

करेगा और शनि देवता का पूजनादि करेगा। लेकिन तत्त्ववेत्ता बोलेगा कि 'पंचभूतों और अष्टधा प्रकृति में चमचम चमकनेवाला वही मेरा चैतन्य है। अगर चैतन्य नहीं होता तो पृथ्वी से रस कैसे लेता? फल कैसे लगते? फूल कैसे खिलते? और सात्त्विक हवाएँ कैसे बनतीं? ब्रह्म पीपल का पेड़ बनकर अपने-आपको पोषित करता है।'

वैज्ञानिक आधिभौतिक नजर से देखता है तो उसका उपयोग आधिभौतिक ही होता है। भक्त भगवद्भाव से देखता है, नारायणरूप मानकर पीपल को फेरे फिरता है, जल चढ़ाता है।

हम जब बच्चे थे तो पीपल की जड़ों को हरि ॐ... ॐ, तू ही ॐ... ॐ करके चम्पी करते थे। बड़ा आनंद आता था। घर से जाते तब भी वहाँ पूजा करते, आते तब भी उसी मस्ती में, आनंद में रहते। तो हमारे अंतःकरण का निर्माण हुआ।

भौतिकवादी को भौतिक फायदा होगा, आयुर्वेदवाले को औषधीय फायदा होगा, भगवद्भाववाले का अपना चित्त-निर्माण होगा और तत्त्ववेत्ता अष्टधा प्रकृति के संगदोष से मुक्त अपने स्वरूप को ही देखेगा।

अब तुम कौन-सा नजरिया अपनाते हो उस पर तुम्हारा भविष्य है। किसीको लगेगा कि गुरु हमारे ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं। किसीको लगेगा उपदेशक हैं। जिसका जैसा नजरिया होता है उस समय उसका चित्त भी वैसा ही बन जाता है और जैसा चित्त होता है वैसा ही दिखता है। इस प्रकार प्राणी-पदार्थों के प्रति अपना-अपना नजरिया है। अतः ऊँचा नजरिया करो, ऊँचे पद को पाओ।

जब तत्त्वज्ञान होता है तो समझते हैं कि ब्रह्म ही पीपलरूप होकर दिखाई देता है और ब्रह्म ही गंगा होकर बह रहा है। ब्रह्म ही सब रूपों में है। सब ब्रह्म-ही-ब्रह्म है। ब्रह्मवेत्ता की ब्रह्मदृष्टि है। भक्त की भगवद्दृष्टि है और भौतिकवादी की भौतिक दृष्टि है। जैसी दृष्टि होती है, अंतःकरण वैसा ही होता है। इसलिए अपना नजरिया ऊँचा कर लेना चाहिए। आध्यात्मिक अर्थघटन करो, नहीं तो भगवद्-अर्थघटन करो।

आधिभौतिक उपयोग में भी आधिदैविक और आध्यात्मिक नजरिये से विशेष लाभ मिलेगा। जैसे - 'हे नारायण ! हे ब्रह्म ! आप औषधरूप में हो...' मंगल-ही-मंगल हो जायेगा। 'आप शत्रु के रूप में आये हो दोष और अहंकार मिटाने को, आप मित्र के रूप में हो हताशा-निराशा मिटाने को। कीड़ी में नन्हे, हाथी में बड़े और महावत में भी आप-ही-आप हो। मुन्ना बनकर ऊँआँ... ऊँआँ... आप ही करते हो और माँ बनकर वात्सल्य देनेवाले भी आप ही हो। चोरी करके भागनेवाले में भी आपकी चेतना और पकड़नेवाले में भी आप-ही-आप ! जलचरों की हरकतों में आप-ही-आप और जलचर को निहारनेवाले भी आप-ही-आप ! गुरु बनकर मंगल नजरिया आप ही दे रहे हो और साधक बनकर सुन रहे भी आप-ही-आप !' - यह परम नजरिया आपको अतिशीघ्र ही परब्रह्म परमात्मा के साथ एकरूप कर देगा। आपको शोक, मोह, राग, द्वेष, भय, चिंता, अहंकार, आवेग, अशांति से मुक्त करके अपनी महिमा में जगा देगा। ॐ... ॐ... लगो लाले-लालियाँ, बेटे ! ऊँचे नजरिये में। 'आईएएस कर लूँ, एम.डी. कर लूँ, पीएच.डी. कर लूँ, एमबीए कर लूँ, यह कर लूँ - वह कर लूँ...' ये कर-करके तो सभी ठगे जा रहे हैं। जो करना है करो लेकिन इस नजरिये को पहले दृढ़ कर लो। ❑

ज्ञानवर्धक पहेलियाँ

(१) अस्त्र न काटे, शस्त्र न काटे, नहीं जलाये आग।
वायु जिसे सुखा नहीं सकती, सदा रहे बेदाग ॥

(२) रात को कर जाती थी, झाड़ू और बुहारी।
गुरुकृपा से प्रभु-दर्शन पाये, वह थी महान नारी ॥

(३) पिता से वक्रता का शाप पाया,
फिर भी मन में क्षोभ न आया।
ज्ञान के रथ पे आरूढ़ होकर,
राजा को आत्मज्ञान कराया ॥

बाल कटवाने के नियम

पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके हजामत बनवानी चाहिए। इससे आयु की वृद्धि होती है। हजामत बनवाकर बिना नहाये रहना आयु का नाश करनेवाला है।

(महाभारत, अनुशासन पर्व : १०४.१२८, १३९)

अपने कल्याण के इच्छुक व्यक्ति को बुधवार व शुक्रवार के अतिरिक्त अन्य दिनों में बाल नहीं कटवाने चाहिए।

सोमवार को बाल कटवाने से शिवभक्ति की हानि होती है। पुत्रवान को इस दिन बाल नहीं कटवाने चाहिए। मंगलवार को बाल कटवाना मृत्यु का कारण भी हो सकता है। बुधवार को बाल, नख काटने-कटवाने से धन की प्राप्ति होती है। गुरुवार को बाल कटवाने से लक्ष्मी और मान की हानि होती है। शुक्रवार लाभ और यश की प्राप्ति करानेवाला है। शनिवार मृत्यु का कारण हो सकता है। रविवार तो सूर्यदेव का दिन है, इस दिन क्षौर कराने से धन, बुद्धि और धर्म की क्षति होती है।

('श्री उड़िया बाबाजी के उपदेश' से)

✻ हाथ-पैर के नाखून नियमित रूप से काटते रहें। नख बढ़े हुए न रखें।

पुण्यदायी तिथियाँ

१९ दिसम्बर : बुधवारी अष्टमी (रात्रि १०-३७ से २० दिसम्बर के सूर्योदय तक)

२७ दिसम्बर : पिशाचमोचनी तिथि (श्राद्ध)

३० दिसम्बर : रविपुष्यामृत योग (सुबह ८-०७ से ३१ दिसम्बर के सूर्योदय तक)

१ जनवरी २०१३ : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से रात्रि १० बजे तक)

१४ जनवरी : मकर संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से सूर्यास्त तक), उत्तरायण

१५ जनवरी : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से दोपहर ३-४२ तक)

सदा अजेय थी जिसकी शमशेर : नारीरत्न रत्नावती

इस देश में ऐसी अनेक वीर कन्याएँ हुई हैं, जिन्होंने अपनी सूझबूझ, विवेक और चतुराई से देश व धर्म की रक्षा की है तथा शत्रुओं को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया । ऐसी ही सूझबूझ व मानवीय संवेदना से परिपूर्ण कन्या थी जैसलमेर के राजा महारावल रत्नसिंह की पुत्री रत्नावती । एक बार राजा रत्नसिंह शत्रुओं पर विजय पाने हेतु किले से बाहर गये थे । राजा की अनुपस्थिति का फायदा उठाकर अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने सेनापति मलिक काफूर के नेतृत्व में किले पर आक्रमण कर दिया ।

किले को चारों तरफ से दुश्मन सेना से घिरा देखकर रत्नावती घबरायी नहीं । 'मैं तो अबला हूँ, मैं क्या कर सकती हूँ ?' - ऐसे दुर्बल विचारों को उसने उठने ही नहीं दिया । प्रथम तो ॐकार का उच्च स्वर में दीर्घ उच्चारण कर साहस, हिम्मत, आत्मबल को जाग्रत किया और फिर जहाँ से साहस, हिम्मत, आत्मबल प्रकट होता है उस आत्म-परमात्मदेव में कुछ समय शांत हो गयी ।

एकाएक राजपूत सैनिकों ने देखा कि सैनिक वेश में घोड़े पर सवार एक कन्या चमचमाती तलवार हाथ में लिये किले के बुर्ज पर खड़ी है । उसने सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा : ''हे वीर योद्धाओ ! तुममें परमात्मा का अथाह बल व सामर्थ्य भरा है । उठो, आगे बढ़ो ! ऐसा क्या है जो तुम कर नहीं सकते ! कौन-सी शक्ति है जो तुम्हें विजयी होने से रोकने में समर्थ हो !

हमें रोक सके ये जमाने में दम नहीं ।
हमसे जमाना है जमाने से हम नहीं ॥''

पलभर में राजपूत सैनिकों के चेहरों पर छायी उदासी उत्साह में बदल गयी । वह कन्या कोई और नहीं बल्कि वीरांगना रत्नावती ही थी । सेनापति मलिक काफूर ने कई बार किले पर आक्रमण किया परंतु हर बार रत्नावती ने उसे दिन में तारे दिखा दिये । किले को तोड़ना असम्भव जान सैनिकों का एक दल किले की दीवार पर चढ़ने लगा । रत्नावती ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए पहले तो अपने सैनिकों को पीछे हटा लिया और शत्रु सैनिकों को चढ़ने दिया पर जैसे ही वे किले की दीवार पर ऊपर तक चढ़ आये राजकुमारी के आदेशानुसार राजपूत सैनिक शत्रुओं पर पत्थर व गर्म तेल की बौछार करने लगे, जिससे शत्रु का पूरा दल नष्ट हो गया । इस बार भी अलाउद्दीन की सेना को मुँह की खानी पड़ी ।

मलिक काफूर अपनी हर चाल को विफल होता देख बिन पानी की मछली की तरह छटपटाने लगा । उसको समझ में आ गया कि वीरता से जैसलमेर का किला जीतना असम्भव है । उसने द्वारपाल को सोने की ईंटों का लालच देकर किले में प्रवेश करने की अपनी कूटनीतिक चाल चली । पर द्वारपाल भी

समझ का धनी और मातृभूमि के प्रति वफादार रहा होगा। उसका मन उसे धिक्कारने लगा, 'क्या ये सोने की ईंटें मरने के बाद साथ में चलेंगी! मेरी गद्दारी से कितने सारे बेगुनाह मारे जायेंगे। नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता!' और द्वारपाल ने रत्नावती को सारी बात बता दी। राजकुमारी ने उसे किले का दरवाजा खोलने की अनुमति दे दी।

आधी रात को १०० सैनिकों के साथ सेनापति मलिक काफूर ने किले में प्रवेश किया। द्वारपाल उसको रास्ता दिखाते-दिखाते अचानक गायब हो गया। सेनापति रास्ता भटकने के कारण भयभीत तो था ही, इतने में किले के बुर्ज पर खड़ी रत्नावती की हँसी सुनकर उसकी हालत शेरनी के मुँह में फँसे बकरे की तरह हो गयी। रत्नावती ने उन सबको बंदी बना लिया।

सेनापति के पकड़े जाने पर भी शत्रु सैनिकों ने किले को घेर रखा था। अब किले के अंदर की खाद्य सामग्री समाप्त होने लगी थी। सैनिक उपवास करने लगे। रत्नावती भी भूख से दुबली व पीली पड़ गयी। रोज केवल एक मुट्ठी अन्न राजपूत सैनिकों को मिलता था फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी। किला जीतना असम्भव जानकर अलाउद्दीन ने राजा रत्नसिंह के पास संधि का प्रस्ताव भेजा। और एक दिन रत्नावती ने देखा कि मुगल सेना तम्बू-डेरा उखाड़ रही है और उसके पिता अपनी सेना के साथ विजयी मुद्रा में वापस आ रहे हैं। रत्नावती ने मुगल सेनापति को छोड़ दिया और राज्य में शांति स्थापित हो गयी।

धन्य हैं भारत की देवियाँ, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम का परिचय देते हुए दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये! फिर परमात्मा भी उनकी मदद किये बिना नहीं रहता है। परम हितकारी हमारे शास्त्र का वचन है :

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्॥ □

कब तक सुख भोग सकोगे?

दुनिया में कुछ भी पा करके,
कब तक सुख भोग सकोगे।
अपना सत् लक्ष्य भुला करके,
कब तक सुख भोग सकोगे॥
जीवन की घड़ियाँ बीत रहीं,
इन्द्रियाँ तुम्हें हैं जीत रहीं।
विषयों में चित्त फँसा करके,
कब तक सुख भोग सकोगे॥
जितना भी भोगों का सुख है,
उसके पीछे निश्चित दुःख है।
उसमें ही समय बिता करके,
कब तक सुख भोग सकोगे॥
क्षण-क्षण जिसमें है परिवर्तन,
पाता है शांति न जिसमें मन।
उससे ही प्रीति लगा करके,
कब तक सुख भोग सकोगे॥
सब अंत समय छुट जायेगा,
जो कुछ है काम न आयेगा।
जन-बल-धनवान कहा करके,
कब तक सुख भोग सकोगे॥
तपसी भोगी राजा रानी,
मर गये करोड़ों अभिमानी।
अपना वैभव यश गा करके,
कब तक सुख भोग सकोगे॥
जो शक्ति मिली परहित कर लो,
सच्चे प्रभु का आश्रय धर लो।
वैभव अधिकार बढ़ा करके,
कब तक सुख भोग सकोगे॥
यदि सत् स्वरूप का ध्यान नहीं,
निष्काम प्रेम सद्ज्ञान नहीं।
ऐ पथिक! कहीं आ जा करके,
कब तक सुख भोग सकोगे॥

– संत पथिकजी महाराज

भगवद्‌भक्त राजा पृथु

(गतांक से आगे)

'मेरी अवस्था कुछ ढल गयी है और जिसके लिए मैंने इस लोक में जन्म लिया था, उस प्रजारक्षणरूप ईश्वर-आज्ञा का पालन भी हो चुका है, अतः अब मुझे अंतिम पुरुषार्थ - मोक्ष के लिए प्रयत्न करना चाहिए।' - यह सोचकर महाराज पृथु ने अपने विरह में रोती हुई अपनी पुत्रीरूपी पृथ्वी का भार अपने पुत्रों को सौंप दिया। सारी प्रजा को बिलखती छोड़कर पत्नी के साथ तपोवन चले गये। वहाँ वानप्रस्थाश्रम के कठोर नियमों का पालन करते हुए सनकादि कुमारों ने उन्हें जिस अध्यात्मयोग की शिक्षा दी थी, उसीके अनुसार राजा पृथु पुरुषोत्तम श्रीहरि की आराधना करने लगे। इस तरह भगवत्परायण होकर श्रद्धापूर्वक सदाचार का पालन करते हुए निरंतर साधन करने से परब्रह्म परमात्मा में उनकी अनन्य भक्ति हो गयी।

इस प्रकार भगवद्-उपासना से अंतःकरण शुद्ध, सात्त्विक हो जाने पर निरंतर भगवद्-चिंतन के प्रभाव से प्राप्त हुई इस अनन्य भक्ति से उन्हें वैराग्यसहित ज्ञान की प्राप्ति हुई। उस तीव्र ज्ञान के द्वारा उन्होंने जीव के उपाधिभूत अहंकार को नष्ट कर दिया, जो सब प्रकार के संशय-विपर्यय का आश्रय है। इसके पश्चात् देहात्मबुद्धि की निवृत्ति और परमात्मा की अनुभूति होने पर अन्य सब प्रकार की सिद्धि आदि से भी उदासीन हो जाने के कारण उन्होंने उस तत्त्वज्ञान के लिए भी प्रयत्न करना छोड़ दिया, जिसकी सहायता से पहले अपने जीवकोश का नाश किया था। फिर जब अंतकाल उपस्थित हुआ तो वीरवर पृथु ने अपने चित्त को दृढ़तापूर्वक परमात्मा में स्थिर कर ब्रह्मभाव में स्थित हो अपना शरीर त्याग दिया। उन्होंने एड़ी से गुदा के द्वार को रोककर प्राणवायु को धीरे-धीरे मूलाधार से ऊपर की ओर उठाते हुए उसे क्रमशः नाभि, हृदय, वक्षःस्थल, कंठ और मस्तक में स्थित किया। फिर उसे और ऊपर की ओर ले जाते हुए क्रमशः ब्रह्मरंध्र में स्थिर किया। अब उन्हें किसी प्रकार के सांसारिक भोगों की लालसा नहीं रही। फिर यथास्थान विभाग करके प्राणवायु को समष्टि वायु में, पार्थिव शरीर को पृथ्वी में और शरीर के तेज को समष्टि तेज में लीन कर दिया। हृदयाकाश आदि - देह में सीमित आकाश को महाकाश में और शरीरगत रुधिर आदि जलीय अंश को समष्टि जल में लीन किया।

इसी प्रकार फिर पृथ्वी को जल में, जल को तेज में, तेज को वायु में और वायु को आकाश में लीन किया। तदनंतर मन को (सविकल्प ज्ञान में जिनके अधीन वह रहता है, उन) इन्द्रियों में, इन्द्रियों को उनके कारणरूप सूक्ष्मभूतों (तन्मात्राओं) में और सूक्ष्मभूतों के कारण अहंकार के द्वारा आकाश, इन्द्रिय और तन्मात्राओं को उसी अहंकार में लीन कर अहंकार को महत्तत्त्व (प्रातः के 'मैं हूँ' इस प्रथम फुरने का आधारस्वरूप बुद्धितत्त्व) में लीन किया। फिर सम्पूर्ण गुणों की अभिव्यक्ति करनेवाले उस महत्तत्त्व को मायोपाधिक जीव में स्थित किया। तदनंतर उस मायारूप जीव उपाधि को भी उन्होंने ज्ञान और वैराग्य के प्रभाव से अपने शुद्ध ब्रह्मस्वरूप में स्थित होकर त्याग दिया। (क्रमशः) ☐

सर्वांगीण शुद्धि द्वारा परम शुद्धि का साधन : गीता

- पूज्य बापूजी

(गीता जयंती : २३ दिसम्बर)

'श्रीमद् भगवद्गीता' ने कमाल का भी कमाल कर दिया ! गीता यह नहीं कहती कि तुम ऐसी वेशभूषा पहनो, ऐसा तिलक करो, ऐसा नियम करो, ऐसा मजहब पालो । नहीं-नहीं, गीता (१८.५७) में आता है :

बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ।

'समबुद्धिरूप योग का अवलम्बन लेकर मेरे परायण और निरंतर मुझमें चित्तवाला हो ।'

बुद्धियोग से मेरी उपासना करके मेरे में चित्त लगाकर मेरे सुख को, आनंद को, माधुर्य को पा लो । गीता का ज्ञान जिसने थोड़ा भी पाया, बीते हुए का शोक उसका सदा के लिए गया । जो बीत जाता है उसका शोक कर-करके लोग परेशान हो रहे हैं । बेटा मर गया, ६ साल हो गये, अभी रो रहे हैं । पति मर गया, ३ साल हो गये, अभी रो रहे हैं । पत्नी मर गयी है, ५ साल हो गये, अभी भी रो रहे हैं, मूर्खता है ।

बीते हुए का शोक गीता हटा देती है । भविष्य के भय को उखाड़ फेंकती है और वर्तमान की विडम्बनाओं को दूर कर गीता तुम्हें ज्ञान के प्रकाश से सम्पन्न बना देती है । तुम रस्सी को साँप, अजगर या और कुछ समझकर परेशान थे, ठूँठे को चोर, डाकू या साधु समझकर प्रभावित हो रहे थे अथवा विक्षिप्त हो रहे थे - यह सारी नासमझी गीता-ज्ञान के प्रकाश से हटा देती है ।

गीता आपके जीवन में ज्ञान की शुद्धि, कर्म की शुद्धि और भाव की शुद्धि ले आती है । बस, तीन की शुद्धि हो गयी तो आपका आत्मा और ईश्वर का आत्मा एक हो जायेगा, आप निर्दुःख हो जायेंगे । आप युद्ध करेंगे लेकिन कर्मबंधन नहीं होगा । आप रागी जैसे लगेंगे किंतु अंदर से निर्लेप रहेंगे । आप खिन्न जैसे लगेंगे परंतु अंदर से बड़े शांत रहेंगे । 'हाय सीते ! सीते ! हाय लक्ष्मण !' करते हुए दिखते हैं रामजी लेकिन वसिष्ठजी के शुद्ध ज्ञान से रामजी वही हैं -

उठत बैठत ओई उटाने,
कहत कबीर हम उसी ठिकाने ।

मृत्यु कब आये, कहाँ आये कोई पता नहीं इसलिए मौत आये उसके पहले अपना क्रियाशुद्धि, भावशुद्धि और ज्ञानशुद्धि का खजाना पा लेना चाहिए । 'मैं लंकापति रावण हूँ...' आग लगी तेरे अहंकार को ! ज्ञान की अशुद्धि हो गयी । ब्राह्मण थे, पुलस्त्य कुल में पैदा हुए थे । भाव की अशुद्धि हो गयी, सीताजी को ले आये । कर्म की अशुद्धि हो गयी, करा-कराया चौपट हो गया । शबरी भीलन को मतंग ऋषि का सत्संग मिला है, ज्ञान की शुद्धि है । 'तुमको कोई मिटा नहीं सकता और शरीर को कोई टिका नहीं सकता' - यह शुद्ध ज्ञान है । लेकिन अमिट (आत्मा) मिटनेवाले शरीर को 'मैं' मानकर मृत्यु के भय से डर रहा है । भगवान श्रीकृष्ण ने ज्ञान की शुद्धि करते हुए कहा :

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि
संयाति नवानि देही ॥

'जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है ।' **(गीता : २.२२)**

अतः मृत्यु से डरो मत और डराओ मत ।

डरने से तुम जीवित नहीं रहोगे, बुरी तरह मरोगे लेकिन निर्भय होने से अच्छी तरह से अमरता की यात्रा करोगे।

एक सवाल पूछूँगा, जवाब जरूर दोगे।

एक किलो रुई है। उसको जलाना हो तो कितनी दियासलाइयाँ लगेंगी ? एक। अगर १० किलो रुई जलानी हो तो १० दियासलाइयाँ लगेंगी क्या ? हजार किलो या लाख किलो रुई को जलाना हो तो दियासलाइयाँ कितनी लगेंगी ? सौ लगेंगी ? लाख लगेंगी ? दो लगेंगी ? नहीं, एक ही काफी है। ऐसे ही कितने ही जन्मों के कर्म हों, कितने ही पाप-ताप हों, नासमझी और ज्ञान की अशुद्धि हो किंतु एक बार गुरुमंत्र मिल गया और लग गये आत्मज्ञान के रास्ते तो बेड़ा पार हो जायेगा। श्रीकृष्ण कहते हैं :

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥

'हे अर्जुन ! जैसे प्रज्वलित अग्नि ईंधनों को भस्ममय कर देती है, वैसे ही ज्ञानरूप अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्ममय कर देती है।' **(गीता : ४.३७)**

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः... यदि तू अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करनेवाला है, दुराचारियों में आखिरी नम्बर का है, **सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि।** तो भी तू गुरु के ज्ञान की नाव में बैठकर निःसंदेह सम्पूर्ण पाप-समुद्र से भलीभाँति तर जायेगा। फिर पानी ५० फुट गहरा हो चाहे ५ हजार फुट गहरा हो, तू बेड़े में बैठा है तुझे चिंता करने की जरूरत नहीं है।

श्रीकृष्ण चाहते हैं कि आपकी समझ की शुद्धि हो, ज्ञान की शुद्धि हो - मरनेवाले शरीर को 'मैं' मत मानो, यह 'मेरा' शरीर है। बदलनेवाला मन है, चिंतन करनेवाला चित्त है, इन सबको देखनेवाला 'मैं' हूँ।

हम हैं अपने आप, हर परिस्थिति के बाप !

सारी परिस्थितियाँ आ-आकर बदल जाती हैं, मौत भी आकर चली जाती है। इसलिए ज्ञान की शुद्धि करो। जल्दी मरने की जरूरत नहीं है और मरनेवाले शरीर को अमर करने के चक्कर में पड़ने की जरूरत नहीं है। न मरनेवाले को अमर करो, न मरनेवाले को परेशान करके जल्दी मारो। स्वस्थ जीवन, सुखी जीवन, सम्मानित जीवन का प्राकृतिक नियम जान लो।

भाव की शुद्धि, कर्म की शुद्धि और ज्ञान की शुद्धि पर गीता ने बड़ा भारी जोर दिया है। तुम्हें ईश्वर को बनाना नहीं है, ईश्वर के पास जाना नहीं है, ईश्वर को बुलाना नहीं है। कण-कण में, क्षण-क्षण में अंतरात्मा ईश्वर है। उसका आनंद, उसका सामर्थ्य, उसका ज्ञान हँसते-खेलते पाना है। ऐसा गीताकार ने युद्ध के मैदान में अर्जुन को अनुभव करा दिया है।

जगत में कर्म की प्रधानता है इसलिए कर्म को ऐसे करो कि करने का अहं नहीं, लापरवाही नहीं, हलकी वासना नहीं। दूसरों के भले के लिए, भगवान की प्रसन्नता के लिए किया गया आपका कर्म 'कर्मयोग' हो जायेगा।

ज्ञान की शुद्धि तत्त्वज्ञान से होती है। मरनेवाला शरीर मैं नहीं हूँ। बदलनेवाला मन मैं नहीं हूँ। इन सबकी बदलाहट को जो जानता है 'ॐ' उसमें शांत होना सीखो। जितने शांत होते जाओगे उतने ईश्वरीय प्रेरणा और ईश्वरीय सामर्थ्य के धनी होते जाओगे।

भगवान कहते हैं : तुम्हारे ज्ञान को तत्त्वज्ञान से दिव्य करो। भगवान के सत्संग से और ध्यान से तुम्हारी भावनाओं को शुद्ध करो और धर्म के नियम से तुम्हारे कर्मों को शुद्ध करो।

गीता का धर्म, गीता की भक्ति और गीता का ज्ञान ऐसा है कि वह प्रत्येक समस्या का समाधान करता है। जब गीता का अमृतमय ज्ञान मिल जाता है, तब सारी भटकान मिटाने की दिशा मिल जाती है, ब्रह्मज्ञान को पाने की युक्ति मिल जाती है और वह युक्ति मुक्ति के मंगलमय द्वार खोल देती है। कितना ऊँचा ज्ञान है गीता का ! ☐

आत्मज्ञान ही सार, बाकी सब बल भार !

(संत ज्ञानेश्वरजी पुण्यतिथि : ११ दिसम्बर)

संत ज्ञानेश्वर महाराज का जन्म भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि की मध्यरात्रि में हुआ था। यह परम पावन पर्वकाल श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का था। एक बार संत ज्ञानेश्वरजी, निवृत्तिनाथजी, सोपानदेवजी व मुक्ताबाई - ये चारों भाई-बहन नेवासा (महाराष्ट्र) पहुँचे। वहाँ उन्हें एक महिला अपने पति के शव के पास रोती हुई दिखाई दी। करुणावश संत ज्ञानेश्वरजी द्वारा मृतक का नाम पूछे जाने पर महिला ने बताया : ''सच्चिदानंद।'' नाम सुनते ही ज्ञानेश्वरजी बोल उठे : ''अरे ! सत्-चित्-आनंद की तो कभी मृत्यु हो ही नहीं सकती।'' फिर उन्होंने मृतदेह पर अपना हाथ फेरा और चमत्कार हो गया ! वह मरा हुआ व्यक्ति जीवित हो उठा। वह व्यक्ति नवजीवन देनेवाले, सच्चिदानंदस्वरूप में जगे उन महापुरुष के शरणागत हो गया। यही सच्चिदानंद आगे चलकर ज्ञानेश्वरजी के गीताभाष्य के लेखक 'सच्चिदानंद बाबा' बने।

कुछ समय बीतने पर चारों संत नेवासा से आलंदी की यात्रा पर निकले। चलते-चलते वे पुणताम्बे गाँव में पहुँचे, जहाँ गोदावरी के तट पर कालवंचना करते हुए चांगदेवजी महासमाधि लगाकर बैठे थे। १४०० वर्ष की तपस्या के बल से वे महायोगी तो बन गये थे परंतु गुरुज्ञान न होने के कारण अहंकार जोर मारता था। चांगदेवजी समाधि लगाते तो उनके चारों ओर मृतदेहें रखी जाती थीं और आसपास मृतकों के सगे-संबंधी बैठे रहते थे। चांगदेवजी समाधि से उठते तो पूछते : ''यहाँ कोई है क्या ?'' तब आसमान से प्रेत-आत्माएँ 'हम यहाँ हैं' कहकर अपने-अपने शरीर में पुनः प्रवेश कर जातीं और वे मृत शरीर पुनः जीवित हो उठते थे।

इन संतों को जब इस बात का पता चला तो 'मृतदेहों के सगे-संबंधियों को चांगदेवजी की समाधि टूटने की राह देखकर परेशान क्यों होना पड़े !' ऐसा सोचकर मुक्ताबाई ने कहा : ''इन सभी मृतदेहों को एकत्र करो, मैं इन्हें जीवित कर देती हूँ।''

ऐसा ही किया गया। संत ज्ञानदेवजी से संजीवनी मंत्र लेकर मुक्ताबाई ने पास में पड़ी कुत्ते की लाश को सभी मृतदेहों के ऊपर घुमाकर दूर फेंक दिया। उसी क्षण वह कुत्ता जीवित होकर भाग गया तथा सभी मृतक भी एक साथ जीवित हो उठे। सभी लोग संतों की अनायास बरसी कृपा का गुणगान करने लगे। वहाँ से विदाई लेकर चारों भाई-बहन आगे की यात्रा पर निकल पड़े।

इधर चांगदेवजी ने समाधि से उठते ही वही प्रश्न पूछा पर कोई जवाब नहीं मिला। शिष्यों से सारा वृत्तांत सुनते ही चांगदेवजी को तुरंत विचार आया कि 'पैठण में भैंसे से वेदमंत्र बुलवानेवाले महान योगी बालक कहीं यही तो नहीं हैं !' अतः दर्शन की उत्सुकतावश अंतर्दृष्टि से उन्होंने बालकों को आलंदी के रास्ते जाते देखा। पर पहले पत्र द्वारा सूचित करना आवश्यक समझकर वे पत्र लिखने बैठे परंतु विचलित हो गये कि यदि उनके नाम के आगे 'चिरंजीव' लिखूँ तो वे मुझसे ज्यादा सामर्थ्यवान हैं अतः उनका अपमान होगा।

यदि 'तीर्थरूप' आदि श्रेष्ठतासूचक विशेषण लिखूँ तो मैं १४०० वर्ष का और मैं ही स्वयं को छोटा दिखाकर उन्हें सम्मान दूँ, इससे मेरी इतने वर्षों की तपश्चर्या निरर्थक हो जायेगी। उनके अहंकार ने जोर पकड़ा, अंततः उन्होंने कोरा कागज ही अपने शिष्य के हाथों भेज दिया।

कोरा पत्र देख मुक्ताबाई ने कहा : ''चांगदेवजी ने यह कोरा कागज हमें भेजा है ! १४०० वर्ष तपस्या करके भी चांगदेव कोरे-के-कोरे ही रह गये ! लगता है इन योगिराज ने जिस तरह काल को फँसाया है, उसी तरह अहंकार ने इन्हें फँसाया है।''

निवृत्तिनाथजी बोले : ''सद्गुरु नहीं मिले इसीलिए इन्हें आत्मज्ञान नहीं हुआ और अहंकार भी नहीं गया। ज्ञानदेव ! आप इन्हें ऐसा पत्र लिखें कि इनके अंतःकरण में आत्मज्योत जग जाय और 'मैं' व 'तू' का भेद दूर हो जाय।''

संत ज्ञानेश्वरजी ने वैसा ही पत्र लिखा किंतु जैसे जल के बिना दरिया और दरिया बिन मोती नहीं हो सकता, ऐसे ही गुरुदेव के मुख से निःसृत ज्ञानगंगा के बिना सच्चा बोध और अनुभवरूपी मोती भी प्रकट नहीं हो सकता। वही योगी चांगदेव के साथ हुआ। अहंकारवश वे सोचने लगे कि ज्ञानदेवजी को वे अपने योग के ऐश्वर्य से प्रभावित कर देंगे। उन्होंने एक शेर पर दृष्टि डाली और संकल्प किया तो वह पालतू कुत्ते की तरह पूँछ हिलाते हुए उनके चरण सूँघने लगा। फिर चांगदेवजी ने एक भयंकर विषैले साँप पर अपने योगबल का प्रयोग किया और उसे चाबुक की तरह हाथ में धारण कर शेर पर सवार हो गये। अपने शिष्य-समुदाय को साथ लेकर वे ज्ञानेश्वरजी से मिलने आकाशमार्ग से निकल पड़े।

इधर चारों संत चबूतरे पर बैठे थे कि अचानक चांगदेवजी को इस प्रकार आते देख मुक्ताबाई ने कहा : ''भैया ! इतने बड़े योगी हमसे इस तरह मिलने आ रहे हैं तो हमें भी उनसे मिलने क्या उसी प्रकार नहीं जाना चाहिए ?''

ज्ञानेश्वरजी बोले : ''ठीक है, तो हम इसी चबूतरे को ले चलते हैं।'' और वे चबूतरे पर अपना हाथ घुमाते हुए बोले : ''चल, हे अचल ! तू हमें ले चल। मैंने तुझे चैतन्यता दी है।''

क्षणमात्र की देर किये बिना अचल चबूतरा चलने लगा। जब चांगदेवजी ने देखा कि चारों संत सहज भाव से चबूतरे पर सवार होकर मेरी ओर आ रहे हैं और अहंकार का चिह्नमात्र भी किसीके चेहरे पर नहीं है तो उनका सारा अहंकार नष्ट हो गया। चांगदेव शेर से नीचे उतरे और दिव्यकांति ज्ञानदेवजी के चरणों से लिपट गये। चौदह सौ सालों से वहन किया गया भार उतारने से चांगदेवजी निर्भार हो गये।

सद्गुरु बिना की तपस्या से सिद्धियाँ तो मिल सकती हैं परंतु आत्मशांति, आत्मसंतुष्टि, आत्मज्ञान नहीं। ऐसी तपस्या से तो जीवत्व में उलझानेवाली सिद्धियों को पाने का अहंकार पुष्ट होता है और यह मनुष्य को वास्तविक शांति से दूर कर देता है। कितनी बार मौत को भी पीछे धकेलनेवाले चांगदेवजी को १४०० साल की तपस्या करने के बाद यही अनुभव हुआ।

यह अहंकार ब्रह्मज्ञानी संतों की शरण गये बिना, उनसे ब्रह्मज्ञान का सत्संग पाये बिना जाता नहीं है। आत्मा में जगे महापुरुषों की बिनशर्ती शरणागति स्वीकार करने पर अहंकार का विसर्जन तथा परम विश्रांति, परम ज्ञान की प्राप्ति वे महापुरुष हँसते-खेलते करवा देते हैं, जिसके आगे १४०० वर्ष की तपस्या से प्राप्त सिद्धियाँ भी कोई महत्त्व नहीं रखतीं। ऐसे ब्रह्मज्ञानी संत ज्ञानेश्वरजी ने आलंदी में विक्रम संवत् १३५३ में मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी के दिन जीवित समाधि ली। □

ज्ञान के बिना भोग नहीं

– पूज्य बापूजी

ज्ञान के बिना भोग नहीं होता । जीभ पर स्वादिष्ट-सलोना व्यंजन आया लेकिन उसका ज्ञान होगा तभी मजा आयेगा । खट्टे-खारे का ज्ञान होगा तभी उसका मजा आयेगा । यह हमारा हितैषी है, उसका ज्ञान होगा तब उसको देख के मजा आयेगा । बिना ज्ञान के भोग नहीं होता ।

वास्तव में देखा जाय तो ज्ञानस्वरूप ईश्वर को ही हम भोग रहे हैं और ईश्वर से ही भोग रहे हैं । यहाँ भी ईश्वर की सत्ता है और इन्द्रियों के द्वारा ज्ञान में भी ईश्वर ही अनेक लीलाएँ करता है । जैसे – स्वप्नद्रष्टा आप ही रेलगाड़ी बन जाता है, आप ही यात्री बन जाता है, आप ही स्टेशन और जंक्शन बन जाता है और 'मुंबई का हलवा, नड़ियाद का गोटा (पकौड़ा) खा ले, भरुच की सींग खा ले...' सपने में भरुच भी तू ही बन गया और नड़ियाद भी तू ही बन गया और नड़ियाद के गोटे भी तू ही बन गया और खानेवाला दूसरा आया क्या ? तू ही खाता है । जान गये बलमा, पहचान गये... गाड़ी आगे चली तो आबू की रबड़ी-पूड़ी... अजमेर का दूध मीठा... क्या-क्या देखते हैं ! एक ही स्वप्नद्रष्टा क्या-क्या बन जाता है ! क्या तेरी लीला है ! हे प्रभु ! हे देव ! हे ज्ञानस्वरूपा, चैतन्यस्वरूपा ! उसकी महिमा विचारते-विचारते चुप हो गये तो बस, ठहर गये । जैसे रात्रि को चुप हो जाते हैं न, तो थकान मिट जाती है, ऐसे ही उसके प्रेम में चुप हो गये तो जन्म-मरण की थकान का पर्दा खुल जाता है धड़ाक्-धुम् ! ब्राह्मी स्थिति आ जाती है ।

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष ।
मोह कभी न ठग सके...

ऐसा नहीं कि मोह सुबह न ठग सके, मोह रात को न ठग सके, मोह अमावस्या को न ठग सके, कभी न ठग सके –

मोह कभी न ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश ॥
पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान ।
आसुमल से हो गये, साँईं आशाराम ॥

मालूम पड़ने से ही भोग होता है और भोग से ही सुख होता है तो ज्ञान से ही मालूम पड़ेगा, ज्ञान से ही भोग होगा, ज्ञान से ही सुख होगा । जो हिन्दी भाषा कतई न जानता हो अथवा बहरा हो, निपट-निराला... वह सत्संग में बैठा हो तो उसको सुख नहीं मिलेगा, माहौल के आंदोलनों का भले उसे पुण्य हो लेकिन जो ज्ञान से सुख होता है न, वह फल वस्तु, व्यक्ति से नहीं होता । कुर्सी मिल गयी तो वह फल नहीं है लेकिन कुर्सी के सुख का फल हृदय में आया, वही फल है । चीज-वस्तु पड़ी है वह फल नहीं है लेकिन उससे हृदय में जो सुख-दुःख होता है वही फल है । जब हृदय से ही सुख और दुःख के फल का एहसास होता है तो हृदय को ही ऐसा बनाओ कि भगवानमय हो जाय । काहे को झंझट में पड़ो ! बड़ा सौदा कर लो ।

बुद्धि में सत्य का ज्ञान, सत्य का प्रकाश, इन्द्रियों में सच्चरित्रता, मन में सद्भाव लाओ और ईश्वर को अपना मानो । सौंप दो उसको, बस हो गया । ज्यादा झंझट में पड़ो ही मत ! तीसरी पढ़े तो पढ़े, नहीं तो नहीं जाना ! हम गये तो समय बिगाड़ा तीन साल, हरि ॐ... ॐ... ऐसा अथाह खजाना है । हमने ३ साल बिगाड़े तो कोई १८ साल, २१ साल बिगाड़ के इधर आये । ईश्वर के सिवाय न जाने कितने जन्म बिगड़ गये, हे हरि ! कितनी उपलब्धियाँ बिगड़ गयीं ! क्योंकि आप शाश्वत हो और शरीर, वस्तु और उपलब्धियाँ ये नश्वर हैं । आप नित्य हो, शरीर, उपलब्धियाँ अनित्य हैं । आप सुखस्वरूप हो, ज्ञानस्वरूप हो, चैतन्यस्वरूप हो । उपलब्धियाँ तो सँभाल-सँभाल के थक जाओगे । बुद्धि में सत्य का निश्चय हो । सत्य एक परमात्मा है । चित्त में समता हो, मन में भगवान का प्रेम हो, अपनत्व हो, सद्भाव हो और आचरण में पवित्रता हो, बस ! फिर तो मौज हो गयी मौज ! मुक्ति हो गयी... शोक, दुःख, जन्म-मरण से पार हो गये ! ❑

सद्गुरु से क्या सीखें ?

- पूज्य बापूजी

(गतांक से आगे)

आठवीं बात गुरु महाराज से यह सीख लो कि हम हर हाल में, हर परिस्थिति में सदा संतुष्ट कैसे रहें ? संतोषी कैसे बनें ?

भगवान पर निर्भर रहने से मनुष्य संतोषी होता है। श्रीकृष्ण ने कहा : **संतुष्टः सततं योगी...** त्रिभुवन में ऐसा कोई भोगी नहीं जो सदा संतुष्ट रह सके और संतोष के बराबर और कोई धन नहीं है। सारी पृथ्वी का राज्य मिल जाय, सोने की लंका मिल जाय लेकिन संतोष नहीं था तो रावण की दुर्दशा हुई। शबरी को संतोष था तो उसकी ऊँची दशा हो गयी। संतोष इतना भारी सद्गुण है ! लोग सोचते हैं, 'बराबर सेटल (सुस्थिर) हो जायें, आराम से रहें, कल को कुछ इधर-उधर हो जाय तो अपना फिक्स डिपोजिट काम करेगा।' तो ईश्वर पर भरोसा नहीं है, प्रारब्ध पर भरोसा नहीं है। स्वामी रामसुखदासजी का अनुभव है - सबसे रद्दी चीज है 'पैसा'। न खाने के काम आता है, न पहनने के काम आता है, न बैठने के काम आता है और न सोने के काम आता है पर सताता जरूर है। जब उस रद्दी चीज को किसीके ऊपर कुर्बान (खर्च) करते हैं तब सोना, खाना, रहना, यश आदि मिलता है।

तो सदा संतोषी कैसे बनें ? भगवान पर निर्भर हो जाओ। शरीर का पोषण प्रारब्ध करता है, पैसा नहीं करता। पैसा होते हुए भी तुम लड्डू नहीं खा सकते क्योंकि मधुमेह (डायबिटीज) है। पैसा होते हुए भी तुम अपनी मर्सिडीज, ब्यूक आदि प्यारी, महँगी, मनचाही गाड़ियों में नहीं घूम सकते क्योंकि लकवा है। तो आप ईश्वर पर निर्भर रहो। जिस परमात्मा ने जन्मते ही हमारे लिए दूध की व्यवस्था की, वह सब कुछ छूट जायेगा तो भी हमारे लिए भरण-पोषण की व्यवस्था करेगा। नहीं भी करेगा तो शरीर मर जायेगा तब भी हम तो अमर हैं। वह अमर (आत्मा) किसी भी परिस्थिति में मर नहीं सकता, फिर चिंता किस बात की ? अमर को तो भगवान भी नहीं मार सकते हैं। अमर को भगवान क्या मारेंगे ! मरनेवाले शरीर तो भगवान ने भी नहीं रखे और अमर तो भगवान का स्वरूप है, आत्मा है। आपको भगवान भी नहीं मार सकते तो बेरोजगारी क्या मार देगी ! भूख क्या मार देगी ! काल का बाप भी नहीं मार सकता। मरता है तब शरीर मरता है, आप अमर चैतन्य हैं। इस प्रकार की ज्ञान की सूझबूझ से और प्रारब्ध पर, ईश्वर पर निर्भर होने से आप संतोषी बन जायेंगे। जो होगा देखा जायेगा, वाह-वाह !

नौवीं बात गुरुजी से सीख लो कि भगवान और शास्त्र में प्रीति कैसे आये ?

संत और भगवान की कृपा से संत और शास्त्र में प्रीति होती है। संत और भगवान की कृपा कैसे मिले ? बोले, उनकी आज्ञा मानो। माता-पिता की आज्ञा में चलते हैं तो उनकी कृपा और सम्पत्ति मिलती है। ऐसे ही भगवान और संत की सम्पदा - शास्त्र-ज्ञान और उनका अनुभव मिलेगा।

दसवीं बात गुरुजी से सीख लो कि निद्रा-त्याग कैसे हो ?

भजन में अधिक प्रीति से तमस् अंश कम होगा। भजन के प्रभाव से निद्रा कम हो जायेगी और थकान भी नहीं होगी। जैसे गुरुपूनम के दिनों में किसी रात को हम डेढ़ बजे सोते हैं तो कभी साढ़े तीन बजे और सूरज उगने के पहले तो उठना ही है। और देखो कितनी प्रवृत्ति है ! तो क्या आपको हम थके-माँदे लगते हैं ? (शेष पृष्ठ २५ पर)

पितरों का उद्धारक व मोक्षप्रदाता व्रत

(मोक्षदा/वैकुंठ/मौनी एकादशी : २४ दिसम्बर)

धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा : ''देवदेवेश्वर ! मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है ? उसकी विधि क्या है तथा उसमें किस देवता का पूजन किया जाता है ? स्वामिन् ! यह सब यथार्थ रूप से बताइये।''

श्रीकृष्ण ने कहा : ''नृपश्रेष्ठ ! मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम 'मोक्षा (मोक्षदा) एकादशी' है, जो सब पापों का हरण करनेवाली है तथा जिसके माहात्म्य के श्रवणमात्र से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। राजन् ! उस दिन यत्नपूर्वक तुलसी की मंजरी तथा धूप-दीपादि से भगवान दामोदर का पूजन करना चाहिए। रात्रि में मेरी प्रसन्नता के लिए नृत्य, गीत और स्तुति के द्वारा जागरण करना चाहिए। जिसके पितर पापवश नीच योनि में पड़े हों, वे इस एकादशी का व्रत करके इसका पुण्य अपने पितरों को अर्पण करें तो पितर मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

राजन् ! पूर्वकाल में वैष्णवों से विभूषित परम रमणीय चम्पक नगर में वैखानस नामक राजा रहते थे। वे अपनी प्रजा का पुत्र की भाँति पालन करते थे। राजा ने एक रात को स्वप्न में अपने पितरों को नीच योनि में पड़े हुए देखा। इससे राजा के मन में बड़ा विस्मय हुआ और प्रातःकाल उन्होंने ब्राह्मणों से कहा : ''ब्राह्मणो ! मैंने अपने पितरों को नरक में गिरे हुए देखा है। वे बारम्बार रोते हुए मुझसे कह रहे थे कि 'तुम हमारे तनुज हो, इसलिए इस नरक-समुद्र से हम लोगों का उद्धार करो।' मेरा हृदय रुँधा जा रहा है। द्विजोत्तमो ! वह व्रत, तप या योग, जिससे मेरे पूर्वज तत्काल नरक से छुटकारा पा जायें, बताने की कृपा करें।''

ब्राह्मण बोले : ''राजन् ! यहाँ से निकट ही पर्वत मुनि का आश्रम है, वे त्रिकालज्ञ हैं। आप उन्हींके पास चले जाइये।''

यह सुनकर वैखानस शीघ्र ही पर्वत मुनि के आश्रम पर गये और वहाँ मुनिश्रेष्ठ को दंडवत् प्रणाम किया। मुनि ने भी राजा से कुशलता पूछी।

राजा बोले : ''स्वामिन् ! आपकी कृपा से मेरे राज्य के सातों अंग सकुशल हैं किंतु मैंने स्वप्न में देखा है कि मेरे पितर नरक में पड़े हैं। अतः बताइये कि किस पुण्य के प्रभाव से उनका उद्धार होगा ?''

राजा की बात सुनकर मुनिश्रेष्ठ एक मुहूर्त तक ध्यानस्थ रहे। इसके बाद वे राजा से बोले : ''महाराज ! मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष में जो 'मोक्षदा' नाम की एकादशी होती है, तुम सब लोग उसका व्रत करो और उसका पुण्य पितरों को दे डालो। उस पुण्य के प्रभाव से उनका नरक से उद्धार हो जायेगा।''

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''युधिष्ठिर ! राजा वैखानस ने मुनि के कथनानुसार मोक्षदा एकादशी का व्रत करके उसका पुण्य समस्त पितरोंसहित पिता को अर्पण किया। ऐसा करते ही क्षणभर में आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी। वैखानस के पिता पितरोंसहित नरक से छुटकारा पा गये और आकाश में आकर राजा के प्रति यह पवित्र वचन बोले : ''बेटा ! तुम्हारा कल्याण हो।'' यह कहकर वे स्वर्ग में चले गये।

राजन् ! जो इस प्रकार कल्याणमयी मोक्षदा एकादशी का व्रत करता है, वह मरने के बाद मोक्ष प्राप्त करता है। यह मोक्षदा एकादशी मनुष्यों के लिए चिंतामणि के समान समस्त

कामनाओं को पूर्ण करनेवाली है।''

भोग व मोक्ष प्रदान करनेवाला व्रत

(सफला एकादशी : ८ जनवरी)

युधिष्ठिर ने पूछा : ''स्वामिन्! पौष मास के कृष्ण पक्ष (गुजरात-महाराष्ट्र अनुसार मार्गशीर्ष) में जो एकादशी होती है, उसका नाम क्या है ? उसकी विधि क्या है तथा उसमें किस देवता की पूजा की जाती है ? यह बताने की कृपा करें।''

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा : ''राजेन्द्र! पौष मास के कृष्ण पक्ष में 'सफला' नाम की एकादशी होती है। उस दिन विधिपूर्वक भगवान नारायण की पूजा करनी चाहिए।

राजन्! सफला एकादशी को नाम-मंत्रों का उच्चारण करके धूप-दीप तथा फलों द्वारा श्रीहरि का पूजन करें। पूजन में नारियल, सुपारी, बिजौरा नींबू, जमीरा नींबू, अनार, आँवला, लौंग और बेर के फलों का उपयोग करें। इस दिन विशेष रूप से दीपदान करने का विधान है। रात को वैष्णव पुरुषों (भक्तों, साधकों) के साथ जागरण करना चाहिए (रात्रि १२-१ बजे तक जागरण करना उचित होगा)। जागरण करनेवाले को जिस फल की प्राप्ति होती है, वह हजारों वर्ष तपस्या करने से भी नहीं मिलता।

नृपश्रेष्ठ! अब सफला एकादशी की शुभकारिणी कथा सुनो। चम्पावती नाम से विख्यात एक पुरी है, जो राजा माहिष्मत की राजधानी थी। राजर्षि माहिष्मत के पाँच पुत्र थे। ज्येष्ठ पुत्र परस्त्रीगामी और वेश्यासक्त था व सदा पापकर्म में ही लगा रहता था। वह दुराचारी, वैष्णवों और देवताओं की निंदा किया करता था। पुत्र को ऐसा पापाचारी देखकर राजा माहिष्मत ने उसका नाम लुम्भक रख दिया। उसे राज्य से बाहर निकाल दिया गया। गहन वन में रहकर लुम्भक ने प्रायः समूचे नगर का धन लूट लिया। एक रात सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया किंतु राजा माहिष्मत का पुत्र जान उसे छोड़ दिया। अब वह वन में मांस तथा फल खाकर जीवन-निर्वाह करने लगा। उस दुष्ट का विश्राम-स्थान एक पुराने पीपल वृक्ष के निकट था। उस वन में वह वृक्ष एक महान देवता माना जाता था।

एक बार पौष मास में कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन पापिष्ठ लुम्भक ने फल खाये और वस्त्रहीन होने के कारण रातभर जाड़े का कष्ट भोगा। वह निष्प्राण-सा हो रहा था। सफला एकादशी के दिन भी वह बेहोश पड़ा रहा। दोपहर होने पर उसे चेतना प्राप्त हुई। राजन्! तब वह वन में फल लेने गया। उसके लौटने तक सूर्यदेव अस्त हो चुके थे। उसने उस पीपल वृक्ष की जड़ में फल निवेदन करते हुए कहा : ''इन फलों से लक्ष्मीपति भगवान विष्णु संतुष्ट हों।'' यों कहकर लुम्भक ने रातभर नींद नहीं ली। इस प्रकार अनायास ही उसने इस व्रत का पालन कर लिया। उस समय सहसा आकाशवाणी हुई : ''राजकुमार! तुम सफला एकादशी के प्रसाद से राज्य और पुत्र प्राप्त करोगे।''

इसके बाद उसका रूप दिव्य हो गया और बुद्धि उत्तम होकर भगवान विष्णु के भजन में लग गयी। उसने निष्कंटक राज्य प्राप्त किया तथा उसको मनोज्ञ नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। जब वह बड़ा हुआ तब लुम्भक ने राज्य की ममता छोड़कर उसे पुत्र को सौंप दिया और स्वयं भगवान के समीप चला गया, जहाँ जाकर मनुष्य कभी शोक में नहीं पड़ता।

राजन्! इस प्रकार जो सफला एकादशी का उत्तम व्रत करता है, वह इस लोक में सुख भोगकर मरने के पश्चात् मोक्ष को प्राप्त होता है।''

श्रीकृष्ण बोले : ''हे युधिष्ठिर! इसकी महिमा को पढ़ने, सुनने, उसका ध्यान करने से तथा उसके अनुसार आचरण करने से मनुष्य राजसूय यज्ञ का फल पाता है।'' □

यौवन का मूल : संयम-सदाचार

- पूज्य बापूजी

महर्षि सनत्सुजात ने महाराज धृतराष्ट्र के समक्ष ब्रह्मचर्य के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा है :

नैतद् ब्रह्म त्वरमाणेन लभ्यं
यन्मां पृच्छन्नतिहृष्यतीव ।
बुद्धौ विलीने मनसि प्रचिन्त्या
विद्या हि सा ब्रह्मचर्येण लभ्या ॥

'राजन् ! तुम जो मुझसे बारम्बार प्रश्न करते समय अत्यंत हर्षित हो उठते हो, सो इस प्रकार जल्दबाजी करने से ब्रह्म की उपलब्धि नहीं होती । बुद्धि में मन के लय हो जाने पर सब वृत्तियों का विरोध करनेवाली जो स्थिति है, उसका नाम है ब्रह्मविद्या और वह ब्रह्मचर्य का पालन करने से ही उपलब्ध होती है ।' **(महाभारत, उद्योग पर्व : ४४.२)**

जीवन में पूर्ण सफल वही होता है, पूर्ण जीवन वही जीता है, पूर्ण परमेश्वर को वही पाता है जो संयमी है, सदाचारी है और ब्रह्मचर्य का पालन करता है।

जिस विद्यार्थी के जीवन में संयम है, सदाचार है और यौवन-सुरक्षा के नियमों का पालन है वह जीवन के हर क्षेत्र में सहज में सफल होता है, बड़े-बड़े कार्य उसके द्वारा सम्पन्न हो सकते हैं। ब्रह्मचर्य शरीर का सम्राट है । ब्रह्मचर्य से बुद्धि, तेज और बल बढ़ता है । ब्रह्मचर्य से जीवन का सर्वांगीण विकास होता है। ब्रह्मचर्य जीवनदाता से मुलाकात कराने में अत्यंत सहायक होता है।

...किंतु आज के वातावरण में ब्रह्मचर्य का पालन कठिन होता जा रहा है। चारों ओर ब्रह्मचर्य का नाश करने के साधन सुलभ हैं । जीवन को तेजोहीन करने की सामग्रियाँ खुलेआम मिलती हैं। लोग अश्लील उपन्यास (नॉवेल्स) पढ़ते हैं, अश्लील गीत सुनते हैं, चलचित्र देखते हैं, व्यसन करते हैं। इससे उनके बल, बुद्धि, ओज-तेज और आयु का शीघ्र नाश हो जाता है और वे असमय ही वृद्धत्व का शिकार हो जाते हैं।

कुछ वर्षों पूर्व 'एक दूजे के लिए' इस नाम का एक चलचित्र देखकर कई युवक और युवतियों ने आत्महत्या कर ली । हालाँकि वह चलचित्र था, वास्तविकता नहीं थी। चलचित्र के नायक सचमुच में ऐसा नहीं करते, केवल अभिनय करके दिखाते हैं। फिर भी पढ़े-लिखे कितने ही लोग आत्महत्या के शिकार हो गये । यह कैसी बेवकूफी है !

अश्लील उपन्यास, सिनेमा, गीत आदि मन को मलिन कर देते हैं। इसके फलस्वरूप तन भी कमजोर हो जाता है। कमजोर, दुर्बल तन-मन महान कार्य कैसे कर सकेंगे ? अतः सावधान ! खाली पेट चाय-कॉफी पीने से वीर्य पतला होता है, स्नायु दुर्बल होते हैं एवं बुद्धिशक्ति कमजोर होती है। अतः इनसे भी बचना चाहिए। शराब, तम्बाकू आदि व्यसन भी जीवनशक्ति को कमजोर करके व्यक्ति को रोगी बना देते हैं। जो व्यक्ति सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सोता रहता है उसका भी ओज-तेज नष्ट हो जाता है।

हम लोग जब नीचे के केन्द्रों में अथवा विकारों में जीते हैं, मांस-मदिरा का सेवन करते हैं अथवा कोई हलका काम करते हैं तो उस वक्त पता नहीं चलता, सब सुखद लगता है किंतु उसका परिणाम बड़ा दुःखद होता है।

हलके काम-धंधे से, हलके वातावरण से, हलका साहित्य पढ़ने से, हलके सिनेमा देखने से, हलके खान-पान से आदमी का पतन हो जाता है, ब्रह्मचर्य खंडित हो जाता है तो अच्छे कार्यों से, अच्छा साहित्य पढ़ने से, अच्छे विचार से, अच्छे एवं सात्त्विक खान-पान से आदमी का उत्थान भी तो हो सकता है ! प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठने से, प्रतिदिन १० सूर्यनमस्कार व प्राणायाम करने से, प्रातःकाल की शुद्ध हवा लेने से, आसन करने से ब्रह्मचर्य की रक्षा होती है। (क्रमशः) ❑

उत्तम चरित्र : जीवन का आधार

सफलता के ऊँचे शिखरों पर पहुँचने तथा वहाँ डटे रहने के लिए उत्तम चरित्ररूपी सीढ़ी का निर्माण अत्यंत आवश्यक है। जिस प्रकार व्यंजनों का आधार नमक, मिठाइयों का आधार शक्कर है उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन का आधार उत्तम चरित्र होता है।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''चरित्र की पवित्रता हर कार्य में सक्षम बनाती है। जिसका जीवन संयमी है, सच्चरित्रता से परिपूर्ण है उसकी गाथा इतिहास के पन्नों पर अंकित की जाती है।''

चरित्रहीन व्यक्ति को सभी धिक्कारते हैं। उसके मन में सामाजिक अपयश का भय हमेशा बना रहता है, फलस्वरूप उसकी योग्यताएँ कुंठित हो जाती हैं और उसे अवसाद, उद्विग्नता आदि रोग आ घेरते हैं।

इसके विपरीत चरित्रवान व्यक्ति का जीवन आत्मसंतोष, आत्मविश्वास, प्रसन्नता आदि सद्गुणरूपी फूलों से महकता रहता है। वह किसी भी नये स्थान पर जाता है तो उसकी छाप, प्रभाव आदि स्वाभाविक ही सबके हृदयों में अंकित हो जाते हैं। उसे सभी लोग पसंद करते हैं।

नोबेल पुरस्कार विजेता भारतीय भौतिक वैज्ञानिक सर सी.वी. रमन को अपने विभाग के लिए एक योग्य वैज्ञानिक की आवश्यकता थी। उन्होंने अखबारों में विज्ञापन प्रकाशित करवाया। उनके पास कई आवेदन-पत्र आये। उन्होंने कुछ का चयन किया और उन्हें साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया। साक्षात्कार समाप्त होने के बाद रमन ने गौर किया कि एक नवयुवक जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था, अब भी उनके कार्यालय के आसपास घूम रहा है। वे तत्काल उसके पास पहुँचे और नाराजगी जताते हुए बोले : ''जब मैंने तुम्हें अस्वीकार कर दिया है तब तुम यहाँ क्यों घूम रहे हो ? यहाँ तुम्हें नौकरी नहीं मिलनेवाली। जाओ, घर चले जाओ !''

युवक ने विनम्रता से कहा : ''सर ! आप नाराज न हों। मुझे यहाँ आने-जाने का जो किराया दिया गया था, वह भूल से कुछ अधिक है। इसलिए मैं यह अतिरिक्त राशि लौटाने के लिए कार्यालय के लिपिक को खोज रहा हूँ।''

भौतिक वैज्ञानिक रमन का हृदय भावपूर्ण हो गया और आँखें सजल हो उठीं। उस युवक को अपलक निहारते हुए उसके कंधे पर हाथ रखकर वे बोले : ''नवयुवक ! मुझे क्षमा कर दो। मैंने तुम्हारा चयन कर लिया है। तुम चरित्रवान हो। भौतिकी के ज्ञान में तुम कुछ कमजोर हो, जिसे मैं तुम्हें पढ़ाकर दूर कर सकता हूँ किंतु चरित्रवान व्यक्ति पाना कठिन है। चरित्र ऐसी योग्यता है जिसके आगे सभी योग्यताएँ बौनी हो जाती हैं।''

वस्तुतः **किसी भी कार्य के लिए सर्वोपरि पात्रता ईमानदारी होती है, जो कर्मनिष्ठा व समर्पण को जन्म देती है और ये गुण व्यक्ति को हर क्षेत्र में निपुणता प्रदान करते हैं। ज्ञान की कमी को दूर करना-करवाना तो सम्भव है किंतु बेईमान आदमी बाहरी योग्यताओं की दृष्टि से कितना भी सुयोग्य हो तो भी हर कोई उससे किनारा कर लेता है।** तो दूसरी ओर -

कपट गाँठ मन में नहीं सब सों सरल सुभाव।
नारायण वा भगत की लगी किनारे नाव ॥ ❑

(पृष्ठ २१ से 'सद्गुरु से क्या सीखें ?' का शेष)

अर्जुन निद्राजित थे इस कारण उनका एक नाम गुड़ाकेश था। ऐसे ही उड़िया बाबा, घाटवाले बाबा भी निद्राजित थे। थोड़ा-सा झोंका खा लेते थे बस। भजन में अधिक प्रीति से, अंतर्सुख मिलने से निद्रा का काम हो जाता है। सत्ययुग में लोग सोते नहीं थे। ध्यान, समाधि से ही नींद का काम हो जाता था। (क्रमशः) ❑

तीन दिव्य गुण, तीन महा अवगुण

- पूज्य बापूजी

भगवान, आत्मदेव में तीन बातें ऐसी हैं कि और कहीं नहीं मिलेंगी। **एक तो वह मरेगा नहीं।** ब्रह्मलोक का नाश हो जायेगा, ब्रह्माजी मर जायेंगे, इन्द्र मर जायेंगे परंतु भगवान मरेंगे नहीं। दूसरी बात क्या है, **बिछुड़ेगा नहीं।** हमारे से अलग होकर बिछुड़ के दिखावे ! हम नहीं जान रहे हैं तभी भी बिछुड़ा नहीं है। हम नहीं मान रहे हैं तभी भी बिछुड़ा नहीं है। महाराज ! आप मरोगे नहीं, बिछुड़ोगे नहीं। **तीसरी बात, बेवफा नहीं बनेगा।** भगवान मरेगा नहीं, बिछुड़ेगा नहीं, बेवफा नहीं बनेगा जबकि शरीर व संसार मरेगा, बिछुड़ेगा और बेवफा बनेगा।

यह केवल लिख दो न अपनी दीवारों पर - **'भगवान मरेंगे नहीं, बिछुड़ेंगे नहीं और बेवफा नहीं होंगे। शरीर और संबंध मरेंगे, बिछुड़ेंगे और बेवफा होंगे।'**

बेटा बाप से बेवफा हो जाता है, पत्नी पति से, पति पत्नी से बेवफा हो जाता है। मित्र मित्र से बेवफा होता है। अरे, अपना शरीर तो बेवफा होता ही रहता है, कितना भी खिलाओ, पिलाओ, धुलाओ, सुलाओ फिर भी कभी कुछ - कभी कुछ। अंत में देखो तो ऐसा लाचार कि सुनने की इच्छा है लेकिन सुनाई कम पड़ता है... बेवफाई हुई ! देखने की इच्छा है किंतु दिखाई कम पड़ता है या नहीं पड़ता है। जीने की इच्छा है और यह हरामी बिछुड़ता है, बेवफाई करेगा। कितना भी खिलाओ, पिलाओ, धुलाओ, सुलाओ फिर भी मोहताज हो गये, उठाकर ले चलो - 'राम बोलो भाई राम...' ऐ बेवफा !

शरीर तो है बेवफा, बिछुड़ जायेगा। रिश्तेदार बेवफाई करेंगे। दमड़ी-दमड़ी जोड़कर मकान बनाया लेकिन मरेंगे न, तो रिश्तेदार हमारी हड्डियाँ घर में नहीं आने देंगे। बोलेंगे : ''अपशकुन है। पेड़ पर बाँधो, गंगा में फेंको।'' तो इनके पीछे झख काहे को मार रहे हो ? इनके लिए थोड़ा-बहुत समय दो, बाकी तो जो मरे नहीं, बिछुड़े नहीं, बेवफा नहीं हो उस अंतरात्मा-परमात्मा की ओर लग जाओ। उस पिया को पा लो, उस प्रभु को पा लो। ❐

ढूँढ़ो तो जानें

'श्रीमद् भगवद्गीता' के दसवें अध्याय में वर्णित भगवान की विभूतियों को नीचे दिये गये संकेतों के आधार पर वर्ग-पहेली से खोजें।

भगवान कहते हैं : ''मैं महर्षियों में......, यज्ञों में ....., स्थिर रहनेवालों में ...., वृक्षों में ...., देवर्षियों में ....., गंधर्वों में ...., सिद्धों में .... मुनि, घोड़ों में ...., हाथियों में .... और मनुष्यों में ...... हूँ।''

म	मी	ल	प	पी	अ	बि	द्दि	म्	अ	र्थी	ति
च	रि	क्रां	च	प	रं	डी	पः	भृ	र	तु	क
र	न	दा	म	क	त	सं	क्रां	ति	म्य	पि	अ
गी	र्णि	च	ङ्क	व	क्षा	कु	हि	र	ल	श	त
त्रि	क्ष	श	रा	व	त्र	कु	प	मा	ष्ठ	णे	च्छि
र	हा	ऐ	पु	जा	ध	ली	हो	दी	ल	ग	चे
च्चैः	शि	बा	ष्ठ	रु	न	उ	पा	गु	रो	य	टी
ती	गु	ड	गु	भृ	म	व	च्चैः	क	र्थ	गु	चं
चि	नं	ज	य	ज	ली	के	मी	श्र	रु	पा	त्थः
ज	त्र	ड़	द	डी	प	व	न	पू	वा	श्व	ग
ता	वृ	र	मी	यः	ङ	य	र्णि	त	त्त	ह	घ
गी	ना	भ	थ	र	र्ष	मा	ज्ञ	श्र	बु	प	र

पिछले अंक में पृष्ठ २५ पर छपी पहेलियों के उत्तर

(१) भगवन्नाम (२) अहंकार
(३) अंतर्यामी (४) शरीर (५) मन

अब वैज्ञानिक भी मान रहे हैं

सिजेरियन डिलीवरी खतरनाक

विश्वमानव के सच्चे हितैषी पूज्य संत श्री आशारामजी बापू वर्षों से सत्संग में कहते आ रहे हैं कि ऑपरेशन द्वारा प्रसूति माँ और बच्चा दोनों के लिए हानिकारक है । अतः प्रसूति प्राकृतिक रूप से ही होनी चाहिए ।

कई प्रयोगों के पश्चात् विज्ञान भी आज इस तथ्य को मानने के लिए बाध्य हो गया है कि प्राकृतिक प्रसूति ही माँ एवं बच्चे के लिए लाभप्रद है । जापानी वैज्ञानिकों द्वारा किये गये शोध से यह सिद्ध हुआ है कि प्रसूति के समय स्रावित होनेवाले ९५% योनिगत द्रव्य हितकर जीवाणुओं से युक्त होते हैं, जो सामान्य प्रसूति में शिशु के शरीर में प्रविष्ट होकर उसकी रोगप्रतिकारक शक्ति और पाचनशक्ति को बढ़ाते हैं । इससे दमा, एलर्जी, श्वसन-संबंधी रोगों का खतरा काफी कम हो जाता है, जबकि ऑपरेशन से पैदा हुए बच्चे अस्पताल के हानिकारक जीवाणुओं से प्रभावित हो जाते हैं ।

स्विट्जरलैंड के डॉ. केरोलिन रोदुइत ने २९१७ बच्चों का अध्ययन करके पाया कि उनमें से २४७ बच्चे जो सिजेरियन से जन्मे थे, उनमें से १२% बच्चों को ८ साल की उम्र तक में दमे का रोग हुआ और उपचार कराना पड़ा । इसका कारण यह था कि उनकी रोगप्रतिकारक शक्ति प्राकृतिक रूप से जन्म लेनेवाले बच्चों की अपेक्षा कम होती है, जिससे उनमें दमे का रोग होने की सम्भावना ८०% बढ़ जाती है । प्राकृतिक प्रसूति में गर्भाशय के संकोचन से शिशु के फेफड़ों और छाती में संचित प्रवाही द्रव्य मुँह के द्वारा बाहर निकल जाता है, जो सिजेरियन में नहीं हो सकता । इससे शिशु के फेफड़ों को भारी हानि होती है, जो आगे चलकर दमे जैसे रोगों का कारण बनती है ।

ऑपरेशन से पैदा हुए बच्चों में मधुमेह (diabetes) होने की सम्भावना २०% अधिक रहती है ।

सिजेरियन के बाद अगले गर्भधारण में गर्भस्थ शिशु के मस्तिष्क एवं मेरुरज्जु (spinal cord) में विकृति तथा वजन कम होने का भय रहता है ।

सिजेरियन डिलीवरी से माँ को होनेवाली सम्भावित हानियाँ :

(१) 'मिन्कोफ्फ एवं चेर्वेनाक २००३' की रिपोर्ट के अनुसार सिजेरियन के समय मृत्यु का भय अधिक होता है । (२) सामान्य प्रसूति की अपेक्षा सिजेरियन के समय माता की मृत्यु की सम्भावना २६ गुनी अधिक रहती है । (३) सिजेरियन के बाद अत्यधिक रक्तस्राव तथा चीरे के स्थान पर दर्द जो ६ महीनों तक भी रह सकता है । (४) गर्भाशय व मूत्राशय के बीच चिपकाव (adhesions) अथवा आँतों में अवरोध, जिससे पेट में स्थायी दर्द का प्रादुर्भाव । (५) अगला प्रसव पुनः ऑपरेशन से होने की सम्भावना। उसमें अत्यधिक रक्तस्राव व गर्भाशय-भेदन (rupture) का डर । (६) गर्भाशय की दुर्बलता व गर्भधारण क्षमता (fertility) का ह्रास । (७) भविष्य में गर्भाशयोच्छेदन (hysterectomy) तथा चीरे के स्थान पर हर्निया का खतरा ।

'विश्व स्वास्थ्य संगठन' की २०१२ की रिपोर्ट के अनुसार भारत में सिजेरियन डिलीवरी की दर बढ़कर ९% हो गयी है । खोजबीन करने पर **'विश्व स्वास्थ्य संगठन'** को यह कड़वा सच भी हाथ लगा कि **'बहुत-से मामलों में अस्पतालों द्वारा पैसे कमाने के लालच में ऑपरेशन द्वारा प्रसूति करवायी गयी ।'** अतः लालच के लिए ऐसा करनेवाले अस्पतालों के

विरुद्ध सख्त कार्यवाही होनी चाहिए, ऐसी माँग देश की जनता में जोर पकड़ रही है । जो माताएँ प्रसूति के दर्द के भय से एवं भावी खतरों से अनजान होने के कारण इसका तुरंत वरण कर लेती हैं, उन्हें अब विश्व के प्रख्यात वैज्ञानिक एवं मूर्धन्य आधुनिक चिकित्सक स्वयं ही चेतावनी दे रहे हैं कि अपनी व संतान की रक्षा के लिए सावधान हो जायें । सिजेरियन नहीं प्राकृतिक प्रसूति से बच्चे को जन्म दें ।

''सामान्य प्रसूति में यदि कहीं बाधा जैसी लगे तो १०-१२ ग्राम देशी गाय के गोबर का ताजा रस निकालें, गुरुमंत्र का जप करके अथवा 'नारायण नारायण...' जप करके गर्भवती महिला को पिला दें । एक घंटे में प्रसूति नहीं हो तो वापस पिला दें । सहजता से प्रसूति होगी । अगर प्रसव-पीड़ा समय पर शुरू नहीं हो रही हो तो गर्भिणी 'जम्भला... जम्भला...' मंत्र का जप करे और पीड़ा शुरू होने पर उसे गोबर का रस पिलायें तो सुखपूर्वक प्रसव होगा ।'' **- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू** □

पूज्य बापूजी के आगामी सत्संग-कार्यक्रम

दिनांक : २५ से २७ दिसम्बर
(ध्यानयोग शिविर एवं पूर्णिमा दर्शन)
स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, आश्रम रोड, जहाँगीरपुरा, सूरत
सम्पर्क : (०२६१) २७७२२०१-०२.

दिनांक : २८ से २९ दिसम्बर (दोपहर तक)
(पूर्णिमा दर्शन)
स्थल : उत्सव ग्राउंड, आई.पी. एक्सटेंशन के पास, पटपड़गंज, यमुनापार, दिल्ली (पूर्व)
सम्पर्क : ९८१०१६५८९४, ९८१००४६०९८.

दिनांक : ३० दिसम्बर से १ जनवरी
स्थल : बी.एम.सी. ग्राउंड, चिकूवाडी, लिंक रोड, बोरीवली (पश्चिम) मुंबई
सम्पर्क : ९७०२८१८८५३, ९८२०३०२६२७.

शीत ऋतु में स्वास्थ्य-संवर्धन

शीतकाल में तक्रपान - अमृत समान

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफवातामयेषु च ।
अरुचौ स्रोतसां रोधे तक्रं स्यादमृतोपमम् ।

'शीतकाल में और अग्निमांद्य, कफ-वातजन्य रोग, अरुचि व नाड़ियों के अवरोध में तक्र (छाछ) का सेवन अमृत की तरह गुणकारी है ।'

गाय के तक्र में विद्यमान आठ गुण : क्षुधावर्धक, नेत्ररोगनाशक, बलकारक, रक्त-मांसवर्धक, कफ-वातशामक, आम (कच्चा आहार रस) नाशक ।

तक्र-निर्माण : गाय के दही में समभाग जल मिला के मथनी से खूब मथकर तक्र बनायें ।

तक्र के प्रयोग :

✻ हींग, जीरा व सेंधा नमक मिलाया हुआ तक्र वायुशामक, दस्त, संग्रहणी व बवासीर में लाभदायी है ।

✻ सोंठ व काली मिर्च मिलाया हुआ तक्र कफशामक तथा मिश्रीयुक्त तक्र पित्तशामक है ।

✻ पेशाब की रुकावट में तक्र में पुराना गुड़ मिलाकर पीना हितकर है ।

✻ राई, मिर्च व सेंधा नमक से छौंक लगाया हुआ तक्र जुकाम व खाँसी में गुणकारी है ।

✻ सर्दियों में भोजन के साथ ताजे मीठे दही का सेवन भी रुचि, बल, मांस व रक्त वर्धक तथा मंगलकारक है ।

सर्दियों में खास गोमूत्र-पान

शरीर की पुष्टि के साथ शुद्धि भी आवश्यक

है । गोमूत्र शरीर के सूक्ष्म-अतिसूक्ष्म स्रोतों में स्थित विकृत दोष व मल को मल-मूत्रादि के द्वारा बाहर निकाल देता है । इसमें स्थित कार्बोलिक एसिड कीटाणुओं व हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करता है । इससे रोगों का समूल उच्चाटन करने में सहायता मिलती है। **गोमूत्र में निहित स्वर्णक्षार रसायन का कार्य करते हैं।** अतः गोमूत्र के द्वारा शरीर की शुद्धि व पुष्टि दोनों कार्य पूर्ण होते हैं।

सेवन-विधि : प्रातः २५ से ४० मि.ली. (बच्चों को १०-१५ मि.ली.) गोमूत्र कपड़े से सात बार छानकर पियें। इसके बाद २-३ घंटे तक कुछ न लें। ताम्रवर्णी गाय अथवा बछड़ी का मूत्र सर्वोत्तम माना गया है।

विशेष : सुबह गोमूत्र में १०-१५ मि.ली. गिलोय का रस (अथवा २-३ ग्राम चूर्ण) मिलाकर पीना उत्कृष्ट रसायन है।

ताजा गोमूत्र न मिलने पर गोझरण अर्क का प्रयोग करें। १०-२० मि.ली. (बच्चों को ५-१० मि.ली.) गोझरण अर्क में पानी मिलाकर लें। (गोझरण अर्क सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध है।)

रोग व पापनाशक पंचगव्य

पंचगव्य शरीर के साथ मन व बुद्धि को भी शुद्ध, सबल व पवित्र बनाता है । शरीर में संचित हुए रोगकारक तत्त्वों का उच्चाटन कर सम्भावित गम्भीर रोगों से रक्षा करने की क्षमता इसमें निहित है । इसमें शरीर के लिए आवश्यक जीवनसत्त्व (विटामिन्स), खनिज तत्त्व, प्रोटीन्स, वसा व ऊर्जा प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। गर्भिणी माताएँ, बालक, युवक व वृद्ध सभीके लिए यह उत्तम स्वास्थ्य, पुष्टि व शक्ति का सरल स्रोत है।

निर्माण व सेवन-विधि : १ भाग गोघृत, १ भाग गोदुग्ध, १ भाग गोबर का रस, २ भाग गाय का दही व ५ भाग छाना हुआ गोमूत्र, सब मिलाकर २५-३० मि.ली. प्रातः खाली पेट धीरे-धीरे पियें। बाद में २-३ घंटे तक कुछ न लें। तीन बार इस मंत्र का उच्चारण करने के बाद पंचगव्य पान करें :

यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम् ॥

अर्थात् त्वचा, मज्जा, मेधा, रक्त और हड्डियों तक जो पाप (दोष, रोग) मुझमें प्रविष्ट हो गये हैं, वे सब मेरे इस पंचगव्य-प्राशन से वैसे ही नष्ट हो जायें, जैसे प्रज्वलित अग्नि में सूखी लकड़ी डालने पर भस्म हो जाती है। **(महाभारत)** ❑

अक्सीर व अनुभूत प्रयोग

जीभ सफेद व भूख मंद हो तो : आधा चम्मच तुलसी के पत्तों का रस शहद के साथ दिन में २ बार लेने से लाभ होता है।

हाथ-पैरों में जलन : गिलोय सत्त्व मिश्री के साथ लेने पर फायदा होता है।

पेशाब में जलन : कपड़े को गीला करके नाभि पर रखें तो पेशाब में और पेशाब की जगह होनेवाली जलन शीघ्र ही कम हो जायेगी।

हिचकी : आँवले का रस पिप्पली या शहद के साथ लेने से हिचकी में फायदा होता है।

ताजगी के लिए : नहाने के पानी में अगर थोड़ा नींबू का रस डालें तो त्वचा मुलायम हो जाती है। इस प्रयोग से दिनभर ताजगी भी महसूस होगी।

दूध बंद करने के लिए : बच्चों को दूध पिलानेवाली माताएँ बच्चा खाना खाने लगे तब दूध बंद करने के लिए दवाइयाँ खाती हैं पर अगर वे चिकनी दूब (दुर्वा) का रस ४-५ चम्मच दिन में ३ बार लें तो कुछ दिनों में दूध अपने-आप बंद हो जायेगा।

रोमकूप खोलने के लिए : कई बार चेहरा स्वच्छ-सुंदर बनाने हेतु भाप ली जाती है। यदि पानी में तुलसी के पत्तों का रस अथवा नींबू का रस डालकर भाप लें तो चेहरे के रोमकूप खुल जायेंगे और चेहरा स्वच्छ व सुंदर हो जायेगा।

विद्यार्थियों की उन्नति का राजमार्ग : 'ऋषि प्रसाद'

मैं आनंदीबाई डिग्री कॉलेज, बोरीवली (मुंबई) में डायरेक्टर हूँ। सन् २००३ में पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने के बाद मुझे बौद्धिक, मानसिक व आध्यात्मिक हर प्रकार के लाभ हुए।

आज पश्चिमी अंधानुकरण के कारण बढ़ते अश्लीलतापूर्ण पतनवाले वातावरण में युवाओं को सही मार्गदर्शन संत-महापुरुषों के अलावा और कोई नहीं दे सकता। इसलिए मैंने सोचा कि 'हर माह पूज्य बापूजी का सत्संग मेरे कॉलेज के विद्यार्थियों को मिलना चाहिए ताकि वे संयमी, संस्कृति-प्रेमी, चरित्रवान, बुद्धिमान बन अपने माता-पिता व देश का नाम रोशन करें।'

तभी मैंने सोचा कि यदि संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका **'ऋषि प्रसाद'** हर माह उन तक पहुँच जाय तो विद्यार्थियों के साथ उनके पूरे परिवार को भी सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शन मिलेगा।

बापूजी की सत्प्रेरणा से मैं पिछले ९ वर्षों से कॉलेज में प्रवेश लेनेवाले सभी विद्यार्थियों से प्रवेश शुल्क के साथ **'ऋषि प्रसाद'** का वार्षिक शुल्क ६० रु. लेकर उन्हें एक साल का सदस्य बनाती हूँ। इससे परीक्षाफल बहुत अच्छा आ रहा है। विद्यार्थियों की खान-पान की आदतों में, शिष्टाचार व आचार-व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन देखे जा रहे हैं। मैं सबकी राय-सम्मति से यह कार्य कर रही हूँ और इससे सभी प्रसन्न हैं। बापूजी की कृपा से मुझे प्राध्यापक से डायरेक्टर बना दिया गया है। अब मेरे अंतर्गत ७ बड़े-बड़े कॉलेज व जूनियर कॉलेज हैं।

मैं सभी अध्यापक-प्राध्यापक वर्ग से अनुरोध करती हूँ कि हम लोग विद्यार्थियों के परीक्षा-परिणाम पर तो ध्यान दें परंतु साथ ही उनके चारित्रिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास पर भी ध्यान दें क्योंकि जो लौकिक शिक्षा स्कूल-कॉलेज में दी जाती है, उससे विद्यार्थी आगे चलकर केवल भौतिक सुविधाएँ एकत्रित कर सकते हैं परंतु जीवन में समता, शांति और सच्चा आनंद पाने की कला नहीं सीख पाते। फलस्वरूप अपनी सारी जिंदगी तनाव, चिंता में बिताकर हताश-निराश हो संसार से चले जाते हैं। कई युवान तो आपराधिक प्रवृत्तियों में लग जाते हैं तो कई आत्महत्या जैसा महापाप भी कर डालते हैं।

आज देश में जो घोटाले, भ्रष्टाचार, महँगाई, बेरोजगारी, अश्लीलता मौजूद है, यह अशिक्षित व्यक्तियों का काम नहीं वरन् देश-विदेश से उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों का काम है। विद्यार्थीकाल में इन लोगों ने भी रातभर जागकर पढ़ाई की होगी, उनके माँ-बाप ने भी उनको पैसा खर्च कर पढ़ाया-लिखाया होगा। लेकिन आखिर परिणाम क्या निकला ? अच्छी डिग्री पा ली परंतु पूज्य बापूजी जैसे संतों का उचित मार्गदर्शन नहीं है तो जिस शिक्षा को समाज व देश के उत्थान में लगाना चाहिए उसीको देश को खोखला करने में लगा रहे हैं। परंतु इसके बावजूद भी भारतवासी पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा सुखी, स्वस्थ व संयमी जीवन जी रहे हैं। यह सब बापूजी की तपस्या का फल है जो भारतवासियों को मिल रहा है।

भारत का यह परम सौभाग्य है कि ब्रह्मज्ञानी संत श्री आशारामजी बापू ७२ वर्ष की आयु में भी अपने एकांतिक, समाधिजन्य सुख को एक तरफ कर पूरे देश में सत्संग-कार्यक्रमों द्वारा ज्ञानवर्षा करके घर-घर में आध्यात्मिक क्रांति का उद्घोष

कर रहे हैं और उनकी इसी ज्ञानवर्षा को अपने में सँजोये हुए है मासिक पत्रिका **'ऋषि प्रसाद'**।

'ऋषि प्रसाद' एक पारिवारिक, सामाजिक व आध्यात्मिक पत्रिका है, जिससे न केवल विद्यार्थियों को बल्कि उनके पूरे परिवार को भी सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शन मिलता है। इस पत्रिका द्वारा विद्यार्थियों को स्मरणशक्ति, बुद्धिशक्ति व एकाग्रता बढ़ाने के यौगिक प्रयोग, प्राणायाम, योगासन व मंत्रों द्वारा आंतरिक शक्ति बढ़ाकर सफलता के उच्च शिखरों तक पहुँचने का राजमार्ग मिलता है। साथ ही उनके अंदर संस्कृति-प्रेम, सदाचार, शिष्टाचार के संस्कार भी पड़ते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि उनका एसक्यू, एसआई बहुत बढ़ जाता है। आज लगभग हर बड़े इंटरव्यू में इसके अतिरिक्त अंक दिये जाते हैं क्योंकि धार्मिक व्यक्ति अधार्मिक की अपेक्षा ज्यादा ईमानदार, सहनशील, चरित्रवान, संयमी, सदाचारी व सद्गुणसम्पन्न होता है, जिसका पूरा लाभ उस कम्पनी को मिलता है जिसमें वह काम करता है।

आज के आपाधापीवाले समय और स्वार्थी वातावरण में भी वे व्यक्ति स्वस्थ, सुखी व सम्मानित जीवन जी रहे हैं जिनके जीवन में पूज्य बापूजी जैसे ब्रह्मज्ञानी संतों का सत्संग-सान्निध्य व मार्गदर्शन है और **'ऋषि प्रसाद'** मासिक पत्रिका पूज्य बापूजी का आशीर्वाद व मार्गदर्शन प्राप्त करने का एक बहुत ही सुंदर और सुगम साधन है।

अतः मैं सभी प्राध्यापकों, विशेषकर बापूजी द्वारा दीक्षित प्राध्यापकों से अनुरोध करती हूँ कि आप भी अपने स्कूल, कॉलेज, इंस्टीट्यूट में पढ़नेवाले विद्यार्थियों को **'ऋषि प्रसाद'** का सदस्य बनायें व समाज के हर वर्ग तक बापूजी जैसे महापुरुष का संदेश पहुँचाकर अपने पद व योग्यता का सदुपयोग करें। पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में मेरे कोटि-कोटि नमन! - **शांतिलता मिश्रा (डायरेक्टर)**

आनंदीबाई कॉलेज ट्रस्ट, बोरीवली (मुंबई)

सम्पर्क सूत्र : ०२२-२८८२८५३३, ०९८२१८८२८९० □

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

२१ अक्टूबर को ऋषि सांदीपनिजी की पावन तपस्थली व भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली **उज्जैन** में रविवारी सप्तमी के पावन योग पर आश्रम में पूज्यश्री के सान्निध्य में सभी साधकों ने जप-ध्यान, सत्संग का लाभ लिया।

२४ अक्टूबर को **भोपाल आश्रम** में विजयादशमी के पावन पर्व पर रावण-दहन की वेला में पूज्य बापूजी ने रावण को निमित्त बनाकर विनोदी लहजे में दर्शनशास्त्र का अमृत व मुक्ति पाने का मार्ग सहज सुलभ कर दिया। सभी यह वीसीडी/डीवीडी अवश्य देखें-सुनें। भक्तवत्सल बापूजी ने रावण-दहन करके भक्तों को अपने जीवन से अहंकार, मद तथा दुर्गुणरूपी रावण दहन करने का मंगलमय संदेश दिया : ''दस इन्द्रियों में रत जीवात्मा भटक रहा है। भटकनेवाले मन-इन्द्रियों पर इस जीवात्मा की विजय का दिवस है विजयादशमी। तो भटकनेवाले मन-इन्द्रियों पर इस जीवात्मा की विजय हो इसलिए विजयादशमी के दिन संकल्प करो कि हम रोज थोड़ी देर परमात्मा में शांत होंगे। कैसी भी परिस्थिति आ जाय, थोड़ा शांत होकर निर्णय करेंगे।''

२६ से २९ अक्टूबर (सुबह तक) भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली **मथुरा (उ.प्र.)** में यमुना के पावन तट पर शरद पूर्णिमा अर्थात् जीव और ब्रह्म के महामिलन के पावन दिवस पर चार दिवसीय साधना शिविर सम्पन्न हुआ। आनंदरसदाता बापूजी ने जहाँ एक ओर ज्ञान, भक्ति व ध्यान की गहराइयों में भक्तों को सराबोर किया, वहीं दूसरी ओर ब्रज का आत्मा कही जानेवाली माँ यमुना की शुद्धता बरकरार रखने के लिए लाखों श्रद्धालुओं से सामूहिक संकल्प करवाकर 'यमुना बचाओ अभियान' में नवचेतना का संचार किया। यहाँ

वास्तविक धन्यता का वर्णन करते हुए पूज्यश्री बोले : ''धन्य कौन है ? धन्य वह व्यक्ति नहीं है जो धनवान है, बुद्धिमान है या जो सत्तावान है, सुंदर है। धन्य तो वह व्यक्ति है जिसने मंगलमय हरि से अपना रिश्ता स्वीकार कर लिया है। रिश्ता जोड़ना नहीं है, जुड़ा हुआ है लेकिन हमारा ईश्वर के साथ अकाट्य संबंध है और संसार के साथ काल्पनिक संबंध है, ऐसा जिसने समझ लिया वह धन्य है।''

अपने प्यारे भक्तों की समय-शक्ति बचाने के उद्देश्य से स्वयं कष्ट उठाते हुए करुणावत्सल पूज्यश्री ने **२९ अक्टूबर** को एक दिन में तीन जगहों पर - सुबह **मथुरा**, दोपहर **रजोकरी-दिल्ली आश्रम** तथा २९ शाम व ३० अक्टूबर को **अहमदाबाद आश्रम** में शरद पूर्णिमा का दर्शन-सत्संग प्रदान किया। अमृत बरसाती शरद पूनम की चाँदनी रात हो, साबरमती नदी का विशाल प्रांगण हो, उस पर आत्मरस से छके हुए ब्रह्मज्ञानी संत पूज्य बापूजी का सान्निध्य हो तो उस सौभाग्य का कहना ही क्या ! यहाँ पहले बापूजी ने ध्यान की गहराइयों में डुबकी लगवायी, फिर स्वास्थ्य एवं पुष्टि वर्धक औषधियों से युक्त तथा चन्द्रमा की चाँदनी से पुष्ट खीर भी खिलायी। बाँसुरी की उपमा द्वारा जीव को अपने स्वरूप की स्मृति कराते हुए बापूजी ने कहा : ''बंसी क्या है ? अपने कुल-खानदान से बिछुड़ा हुआ एक बाँस का टुकड़ा है, अंदर से पोला और बाहर उसको बजाने के लिए तपे हुए लोहे के प्रभाव से सुराख किये हुए हैं। जब 'सबमें एक और एक में सब' की भावना से श्रीकृष्ण ने उसमें केवल फूँका और निगाहों से कृपामृत बरसाया तो बंसी सम्मानित हो गयी, आदरणीय हो गयी। परंतु हम तो उससे (परमात्मा से) बिछुड़े ही नहीं थे, बिछुड़ने का भ्रम था और सद्गुरु ने ज्ञान की बंसी बजा दी, उपदेश दे दिया तो आदरणीय हो गये, **आसुमल से हो गये साँईं आशाराम**।''

३१ अक्टूबर (दोपहर) को पूज्यश्री **अखनूर (जम्मू-कश्मीर)** पहुँचे। वहाँ हेलिकॉप्टर दुर्घटना के बाद ईश्वरीय चमत्कार का प्रत्यक्ष प्रमाण देनेवाली एक और घटना का खुलासा करते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''खबर आयी है कि अमेरिका में तूफानी कहर कई शहरों को प्रभावित कर गया और न्यूयॉर्क और न्यूजर्सी में इसका घोर तांडव हुआ। कइयों के घर उड़ गये किंतु न्यूजर्सी में उन घरों के पास में अपना आश्रम है, वह ज्यों-का-त्यों खड़ा है। बापू के आश्रम को तूफान ने भी पहचान लिया कि बाबा का आश्रम है, तोड़फोड़ करना ठीक नहीं।''

१ नवम्बर को जिला कठुआ (जम्मू-कश्मीर) के छोटे-से गाँव **कूटा** में बापूजी के सत्संग-कार्यक्रम में लघु (मिनी) कुम्भ-सा नजारा दिखा। वैसे तो वहाँ हर वर्ष 'श्रीमद् भागवत कथा' का आयोजन होता है परंतु इस वर्ष पूर्णाहुति के समय भगवत्स्वरूप बापूजी का सत्संग-सान्निध्य लाभ लेने के लिए ऐसा जनसैलाब उमड़ा कि पूज्यश्री के सत्संग-स्थल पर पहुँचने से पहले ही श्रद्धालुओं ने पंडाल को नन्हा बना दिया। भगवन्नाम की महत्ता समझाते हुए बापूजी बोले : ''कलिकाल में नामजप से बड़ा कोई कार्य नहीं है। भगवान के नाम की स्मृति सभी मंगलों की खान है। भगवन्नाम-जप से सभी दिशाओं में मंगल होने लगता है।''

वैसे तो दीपावली १३ नवम्बर को थी परंतु **२ नवम्बर** को **रामगढ़, जिला साम्बा (जम्मू-कश्मीर)** में सत्संग के लिए बापूजी **१ नवम्बर** की रात को महालशाह गाँव के आश्रम में पधारे तो उसी रात को वहाँ के लोगों ने दीपावली मनायी। गाँववालों ने कहा : 'एक दीपावली वह थी जो भगवान रामजी के अयोध्या आगमन पर मनायी गयी थी और दूसरी यह दीपावली है जो पूज्य आशारामजी के रामगढ़ आगमन पर मनायी गयी है।' बापूजी के आगमन की खुशी में सभीने अपने घरों के बाहर दीपक जलाये। पूरे मार्ग में ३ कि.मी. तक दीपकों की लम्बी

कतारों का दृश्य अद्‌भुत था ! गाँव के लोगों ने दीपकों से आरती उतारकर बापूजी का स्वागत किया ।

३ व ४ नवम्बर को **जम्मू आश्रम** में सत्संग के बाद **५ से ७ नवम्बर** तक **रजोकरी आश्रम** तथा **८ व ९ नवम्बर** को **उदयपुर आश्रम** में बापूजी का एकांतवास रहा । तत्पश्चात् पूज्यश्री पहुँचे गरीबों, आदिवासियों के बीच दिवाली की खुशियाँ बाँटने । २-२ कि.मी. तक लम्बी कतारों में कतारबद्ध आते हुए और सिर पर सामान का बड़ा थैला व हाथ में नये बर्तन और चेहरे पर खिली आनंद व खुशी की लाली लेकर जाते हुए आदिवासी... यह मनोहर दृश्य था **१० नवम्बर** को **गोगुंदा (राज.)** कस्बे का । दिवाली के शुभ अवसर पर प्रतिवर्ष की भाँति गरीबनिवाज बापूजी ने गरीबों, आदिवासियों व जरूरतमंदों में भंडारा किया । भंडारे का समय सुबह ८.३० बजे का था लेकिन लाभार्थियों का भंडारा-स्थल पर सुबह ५ बजे से ही ताँता लग गया । बापूजी ने आदिवासियों को स्टील के डिब्बे, बर्तन, मिठाई, अनाज, खजूर, गुड़, तेल, छाछ, आँवला चूर्ण, आँवले का अचार, मिक्स अचार, साड़ी, चनिया, ब्लाउज, धोती-कुर्ता, बच्चों के कपड़े, जूते-चप्पल, साबुन, मोमबत्तियाँ, माचिस आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं के साथ नकद दक्षिणा भी प्रदान की । यह सामान इतना अधिक हो गया था कि अनेक लाभार्थियों को सामान उठाकर ले जाने में सेवादारों को मदद करनी पड़ी । नजारा यही था कि जो जितना उठा सका ले गया पर सामान नहीं खूटा । सभीने अपने दिलबर दाता बापूजी के सत्संग, कथा-कीर्तन का आनंद-रस भी खूब पिया और वह भी नहीं खूटा । दुःख, शोक, व्यसनों का दिवाला निकल गया और दिवाली तो क्या यहाँ महादिवाली हो गयी !

११ नवम्बर को **कोटड़ा (राज.)** में भंडारे का आयोजन हुआ, जिसमें भक्तवत्सल बापूजी के प्रति आदिवासियों का अगाध प्रेम देखने को मिला । जहाँ भंडारे के समय से तीन घंटे पूर्व ही बापूजी भंडारा-स्थल पर पहुँच गये और अपने प्यारों का हालचाल पूछा, वहीं गरीब आदिवासी श्रद्धालुओं ने भी अपने सुहृद को अपने बीच पाकर छोटी-बड़ी हर बात बतायी । वह सुबह का समय था, बापूजी ने सहज में कहा : ''अभी तुम लोगों को नाश्ता कराता हूँ ।'' उसी समय एक व्यक्ति वहाँ बूँदी व सेव के थैले लेकर आया और कहने लगा कि ''बापूजी ! ईडर से बूँदी व सेव लेकर आया हूँ ।'' कैसी है ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की अद्‌भुत महिमा ! उनके चित्त में जो सहज, स्वाभाविक फुरना होता है, उसे पूरा करने में प्रकृति अपना सौभाग्य मानती है ।

यहाँ भी गोगुंदा जैसा ही भंडारे का नजारा था । आदिवासी तृप्त होकर, जितना हो सका उतना भर-भर के सामान ले गये । बापूजी ने आदिवासियों को पूरे वर्ष को सुखमय, आनंदमय करने का सहज व सरल उपाय बताते हुए कहा : ''दिवाली की रात को 'मैं भगवान का हूँ, भगवान मेरे हैं । भगवान मेरे अंतर्यामी हैं, हरि ॐ शांति...' ऐसे प्रीतिपूर्वक जप करते-करते सोना और नये वर्ष के प्रथम दिवस नींद में से खुश होकर उठना तो पूरा वर्ष खुशी में जायेगा ।''

आगे-पीछे कुल १६ भक्ति-जागृति रथ, बीच में बापूजी की गाड़ी, उसके पीछे सैकड़ों वाहन - यह अद्‌भुत नजारा था **१२ नवम्बर को** सूरत हवाईअड्डे से **सूरत** आश्रम के रास्ते का । हरिनाम संकीर्तन के साथ प्रसाद बाँटते व सूरत के मुख्य स्थानों व राजमार्गों में दर्शन देते हुए बापूजी सूरत आश्रम पधारे । देश के विभिन्न भागों में भ्रमण कर भारतीय संस्कृति की महिमा उजागर करनेवाली तथा लोगों के हृदय में भगवद्‌भक्ति का संचार करनेवाली **भक्ति-जागृति रथयात्राओं** का पूज्यश्री ने दीप-प्रज्वलन कर शुभारम्भ किया । इसके साथ ही इस बार बापूजी ने सूरत में नजदीक के गाँवों के गरीब मजदूरों में भंडारा किया । स्टील

के बर्तन, मिठाईभरे डिब्बे, चावल, खजूर, तेल, आँवला चूर्ण, आँवले का अचार, साबुन, धोती-कुर्ते, साड़ी, चनिया तथा अन्य जीवनोपयोगी वस्तुओं के वितरण के साथ उन्हें भरपेट खिला-पिलाकर दक्षिणा दे के, हरिरस में झुमा के उनकी भी हरिमय दिवाली कर दी।

१३ से १९ नवम्बर तक अहमदाबाद में पूज्य बापूजी के सान्निध्य में विद्यार्थियों का अनुष्ठान शिविर आयोजित किया गया था परंतु निर्दोष बच्चों के प्रेमपाश में बँधकर बापूजी **१२ नवम्बर** को ही अहमदाबाद खिंचे चले आये। उपस्थित जनमेदनी को लौकिक दिवाली से आध्यात्मिक दिवाली की ओर बढ़ने का सत्संग देते हुए तथा जीवन के हर दिन को दिवाली बनाने की युक्तियाँ देते व प्रयोग कराते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''**तुम्हारी हो हर रोज दिवाली। आयी शुभ दिवाली, साधो ! जगमग दीप जगाता चल...** बाहर के दीप तो बुझ जायेंगे लेकिन सूझबूझ के दीप तुम्हारे जीवन में जगमगाते रहें। सहज, स्वाभाविक सुख में आपकी गति हो।''

सात दिवसीय **'विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर'** में भारतभर से आये हजारों विद्यार्थियों ने जहाँ पूज्यश्री के दिव्य आभामंडल से ओतप्रोत वातावरण में श्रेष्ठतम जीवन के निर्माण में आवश्यक कुंजियों का खजाना पाया, वहीं दिवाली के पुनीत अवसर पर फूलों से सजा आकर्षक झूला, पूज्यश्री की अद्भुत निराली साँवरिया सेठ की वेशभूषा, मुख पर झलकती अलौकिक मधुर मुस्कान तथा छप्पन भोग के प्रसाद ने भक्तों को नरसिंह मेहता के साँवरिया सेठ की याद दिला दी। सातों दिन पूज्यश्री की ब्रह्मानंदी मस्ती में भक्त सराबोर रहे। इन सात दिनों में पूज्य बापूजी के सान्निध्य से विद्यार्थियों की खूब आध्यात्मिक उन्नति हुई। साथ ही बापूजी ने विद्यार्थियों को शारीरिक-मानसिक रूप से सशक्त बनाने पर भी विशेष ध्यान दिया। यहाँ सातों दिन विद्यार्थियों को पुष्टिदायक औषधियों व गाय के घी से युक्त देशी गाय के दूध की खीर खिलायी गयी। बुद्धिशक्ति बढ़ानेवाले बादाम, अखरोट को रात को पानी में भिगोकर सुबह नाश्ते के पहले खिलाया गया। शिविर में बच्चों को उत्तम दिनचर्या के ज्ञान के साथ सूर्यनमस्कार, तुलसी-सेवन आदि प्रयोग कराकर बुद्धिवर्धक यौगिक युक्तियाँ तथा स्वस्थ रहने की अद्भुत कुंजियाँ भी प्रदान की गयीं।

शिविर में प्रतिभा खोज, वक्तृत्व व भजन स्पर्धाओं का आयोजन किया गया, जिनके विजेताओं को साइकिल, टेबलेट (छोटा लैपटॉप) तथा प्रोत्साहन पुरस्कार दिये गये। वक्तृत्व स्पर्धा में गुरुकुल तथा अन्य सभी विद्यार्थियों में से चयनित १७ छात्र-छात्राओं को पूज्य बापूजी के समक्ष वक्तृत्व कौशल को प्रदर्शित करने का अनुपम सुअवसर भी मिला।

आगरा, भोपाल, धुलिया, छिंदवाड़ा, जयपुर, राजकोट, अहमदाबाद, सूरत तथा इंदौर गुरुकुलों से आये ऋषिकुमार, जिनके ४ महीने से छात्रावास में सतत अनुशासन, सेवा तथा संस्कारों के आधार पर 'साँईं श्री लीलाशाहजी संस्कार पुरस्कार' हेतु क्रियाकलाप देखे जा रहे थे, उनमें से चुने हुए विद्यार्थियों की मौखिक व लिखित परीक्षाएँ ली गयीं। उनमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं को कुल ४०,००० रु. तथा अन्य ४० विद्यार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में १०००-१००० रु. की नकद राशि के साथ इन सभी प्रतियोगियों को बैग, हाथ घड़ी तथा सत्साहित्य सेट भी दिया गया।

इस अनुष्ठान के दौरान विद्यार्थियों को सेवारूपी महायज्ञ का भी लाभ मिला। विद्यार्थियों को इन ७ दिनों में इतना आध्यात्मिक खजाना मिला जो अन्य किसी माध्यम से कई वर्षों में भी पाना मुश्किल है। □

भौंडसी (हरि.)
शरद पूर्णिमा महोत्सव, मथुरा
सनावद (म.प्र.)
इन्दौर (म.प्र.)
इगलास (उ.प्र.)
हाथरस (उ.प्र.)
७ दिवसीय विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर, अहमदाबाद आश्रम

१०० पुस्तकें लेने पर २० पुस्तकें भेंटस्वरूप दी जायेंगी।

सम्पर्क : बाल संस्कार विभाग, दूरभाष : (०७९) ३९८७७७४९/५०/५१